मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

बेहतर समाज की आवश्यकता

''यहां सबसे ज़्यादा ख़तरा जो महसूस होता है वो समाज का भ्रष्ट हो जाना है। इतिहास बताता है कि शानदार गणतन्त्र के युगों में भी जब समाज भ्रष्ट हो गया, झूठा हो गया, तो उसने राष्ट्रों के चिराग़ गुल कर दिये और उनके लिये सफलता की जितनी संभावनाएं हो सकती थीं सब समाप्त कर दीं। समाज स्वस्थ्य है, व्यवहारिक स्तर रखता है तो बेहतर से बेहतर साम्राज्य की स्थापना हो सकती है। लेकिन समाज अगर अपनी विशेषताओं को खो चुका है तो कोई बड़े से बड़ा लोकतन्त्र भी सफल नही हो सकता है, और कोई सामरी भी उस गोशाला में जान नहीं फूंक सकता।''

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

JAN 15

₹10/-

हम्द व शुक्र

ज़बान के लिये ये बड़े गर्व की बात है कि वह हम्द व शुक्र के शब्दों से तर रहे। यूँ भी ये बड़ी एहसान फ़रामोशी है कि एहसान व अच्छा सुलूक करने वाले का शुक्र न अदा किया जाये और उसकी तारीफ़ न की जाये। अल्लाह तआला ने हम पर बहुत से एहसान किये हैं और हर वक़्त उसकी नेमतों से हम लोग फ़ायदा उठाते रहते हैं। दाना, पानी, हवा, रोशनी, सेहत व आफ़ियत, अमन व सलामती और उन जैसी बेशुमार नेमतें हैं जो अल्लाह तआला ने हमको आपको दे रखी हैं। जिनका कोई बदल नहीं है। उनमें से अगर कोई नेमत हमसे छीन ली जाये तो ज़िन्दगी दुश्वार हो जाये। मगर इन्सान की फ़ितरत नाशुक्री और एहसान फ़रामोशी की तरफ़ आकर्षित रहती है।

कुरआन शरीफ़ में फ़रमाया गया है:

"और जब हम इन्सान पर ईनाम करते हैं तब वो ऐराज़ करता है और अकड़ता है और जब उसको कोई तकलीफ़ पहुंचती हैं तो वह मायूसी का शिकार हो जाता है।"

कुरआन पाक में हम्द व शुक्र का ज़िक्र

अल्लाह तआला ने अपने सारे बन्दों को एहसान मन्दी और हम्द व शुक्र की ताकीद की है। सूरह फ़ातिहा जो नमाज़ की हर रकआत में पढ़ी जाती है और कुरआन शरीफ़ की सबसे पहली सूरह है, उसकी शुरूआत भी हम्द से की गयी है:

"सब तारीफ़ है अल्लाह की जो सारे जहानों का पालने वाला है।"

फिर जगह–जगह अल्लाह ने अपने एहसानों की निशानदेही फ़रमायी है और हम्द व शुक्र के शब्दों से अपने बन्दों को आगाह किया है। पूरे कुरआन शरीफ़ में अलग–अलग तरीक़ों से तारीफ़ के अल्फ़ाज़ आयें हैं। कहीं ख़ुद तारीफ़ फ़रमायी है और कहीं उन नेक लोगों का ज़िक्र है जो ख़ुदा की तारीफ़ में ज़बान हर वक़्त तर किये रहते हैं।

हम्द व शुक्र का हुक्म:

अल्लाह तआला अपने बन्दों को आकर्षित करके इरशाद फ़रमाता है:

"पस तुम लोग मुझे याद करो, मैं तुमको याद रखूंगा और मेरा शुक्र करो और नाशुक्री मत करो।" (बक़रा : १८)

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:०१ जनवरी २०१५ ई० वर्ष:७

संरक्षक: हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी (अध्यक्ष - दारे अरफ़ात)

निरीक्षक
मौ० वाज़ेह रशीद हसनी नदवी
जनरल सेकेरेट्ररी- दारे अरफ़ात

सम्पादक
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नारवुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

मुद्रक
मो० हसन नदवी

सह सम्पादक
मो० नफ़ीस ख़ॉ नदवी

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

इस अंक में:

देश का ख़तरनाक रुख़ और हमारा कर्तव्य.....३
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

इस्लामी दुनिया की वर्तमान पीड़ा और उसका.....४
मौलाना सैय्यद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

अर्शे ईलाही के साये में.....५
मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी रह०

इस्लामी अक़ीदा.....७
बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

माहवारी के कुछ एहकाम.....८
मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

नशे से पाक समाज किन्तु कैसे.....१०
जनाब मुहम्मद आसिफ़ इक़बाल

अल्लाह उनसे राज़ी वे अल्लाह से राज़ी.....१३
ख़लील अहमद हसनी नदवी

भलाई की भावना.....१५
मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

रूढ़िवादिता और कट्टरता.....१६
सैय्यद मुहम्मद मक्की हसनी नदवी

लोकतन्त्र की पीड़ा.....१७
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

तौफ़ीक़-ए-इलाही.....१९
अबुल अब्बास ख़ाँ

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल-नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

प्रति अंक 10रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफ़सेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला ख़ॉ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल-नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक 100रू०

देश के लिये पहला गंभीर ख़तरा

"किसी देश की आबादी भले कितनी ही ज़्यादा हो, उसके पास प्राकृतिक साधनों की कितनी ही अधिकता हो, वह देश चाहे कितना ही उपजाऊ व धनी हो, उसमें शिक्षा कितने ही उच्च स्तर तक पहुंच चुकी हो, कोई चीज़ ऐसे देश को सुरक्षित नहीं रख सकती जो बिरादर कशी की बीमारी में पड़ा हो।

ये बड़ी हैरत और बहुत ही अफ़सोस की बात है कि वह देश जिसने पुराने ज़माने में प्रेम की बांसुरी बजायी थी और आकर्षित लय में हिन्दी, संस्कृत, फ़ारसी और फिर उर्दू में मुहब्बत का पैग़ाम दिया था और आख़िर दौर में भी जहाँ बैठकर मुसलमान सूफ़ियों ने मानवमित्रता और मानवता के सम्मान का पाठ पढ़ाया था। जिस धरती से गांधी ने अहिंसा का संदेश सारी दुनिया को सुनाया था और जिसके पास आज भी हर भाषा में दोस्ती को लम्बा चौड़ा लिट्रेचर है, उस देश में आज मानवता की महानता और मानवीय जान के मूल्य का पूरा–पूरा एहसास नहीं।

ये एहसास व ख़्याल इस देश में रच बस जाना चाहिये था कि भाषा की समस्या, सभ्यता व संस्कृति की समस्या, लेखनी की समस्या, इन्सान की समस्यांए हैं, और वे उसके अधीन हैं। उन्हें इन्सानों ने पैदा किया है, उनके अन्दर जो कशिश और मानवियत है वो इन्सान के निस्बत से है। अगर इन्सान की जान सुरक्षित नहीं तो कैसी ज़बान, कहाँ की सभ्यता, कहाँ का दरिया, कैसे पहाड़, कैसा साहित्य व लिट्रेचर और कहाँ की शायरी! डन चीज़ों में कोई वास्तविकता नहीं, वास्तविकता तो इन्सान में है!!"

देश के लिये दूसरा गंभीर ख़तरा

"हमारे देश पर दौलत पैदा करने का एक ऐसा भूत सवार है जिसने देश के पूंजीवादी हालात और व्यवस्था को छिन्न–भिन्न कर दिया है। हर व्यक्ति इस चिन्ता में है कि वह रातोरात अमीर बन जाये। दौलत प्राप्त करना बुरा नहीं, मगर जल्द से जल्द दौलतमन्द बन जाने और हथेली पर सरसों उगाने का शौक़ ख़तरनाक और तबाह करने वाला है। ये शौक़ एक औलाद की तरह बह पड़ा है और एक ज्वालामुखी की भांति फट पड़ा है। इस बीमारी का शिकार शहर, क़स्बे और देहात सब हैं, दौलत परस्ती का ये जुनून देखकर कई बार कुछ ऐसा महसूस होने लगता है कि इस देश में हर चीज़ दम तोड़ चुकी है, केवल दो चीज़ें ज़िन्दा हैं; एक आपसी नफ़रत और दूसरे ज़्यादा से ज़्यादा दौलत पैदा करने की हवस! जीती जागती हक़ीक़तें यही हैं और बाक़ी सब कुछ फ़लसफ़ा और शायरी है।

आपसी नफ़रत की घटनाएं आए दिन हमारी आंखों के सामने होती रहती हैं, कभी इस नफ़रत का रुख़ किसी सम्प्रदाय की ओर होता है, कभी किसी बिरादरी की ओर, कभी किसी सभ्यता, भाषा और क्षेत्र की ओर तो कभी किसी राजनीतिक पार्टी की ओर!

राजनीतिक पार्टियों के विरोध अपनी जगह, समाज में व्यवहारिक बुराइयां हर दौर में रही हैं, मगर दौलत परस्ती का इस तरह लोगों पर सवार हो जाना कि अपने फ़ायदे के लिये देश के फ़ायदे की ज़रा भी परवाह न हो, ये कितनी गंभीर बात है!

इस ख़तरे का इलाज खुदा का ख़ौफ़, आख़िरत की पूछताछ का ख़तरा और ऐसी पाक ज़ात का विचार है जिसके संबंध में आस्था है कि वह सब कुछ देख रहा है!!"

——— हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०) ———

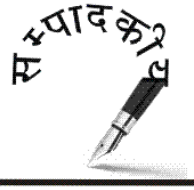

सम्पादकीय

देश का ख़तरनाक रुख़ और हमारा कर्तव्य

● बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

अठ्ठारहवीं सदी के आरम्भ की बात है जब कलकत्ता में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के नाम से अंग्रेज़ों ने इस देश में क़दम जमाने शुरू किये। आर्थिक उन्नति के मार्ग से उन्होंने धीरे-धीरे आगे बढ़ना शुरू किया फिर यहाँ के लोगों को वे दिन देखने पड़े कि उनको ग़ुलामी के शिकन्जे में जकड़ा जा चुका था और सात समन्दर पार के लोग यहां के रहने वालों को मजबूर व लाचार कर चुके थे। ग़ैरत की दबी चिंगारी ने फिर काम किया और धीरे-धीरे वह एक शोला व ज्वाला बन गयी। सन् 1857ई0 में वह ताक़त बन कर उभरी और उसने साम्राज्यी व्यवस्था को ज़बरदस्त टक्कर दी जिसमें यहाँ के लोगों को बड़ी क़ुर्बानियाँ देनी पड़ीं, लेकिन आज़ादी का आन्दोलन दिमागों में समा गया और पूरे देश में विदेशी शासन के ख़िलाफ़ ऐसा जोश पैदा हो गया कि 1947ई0 में विदेशी ताक़तों को ये देश छोड़ना पड़ा और एक लम्बी मुद्दत के बाद ये देश आज़ाद हुआ।

आज़ादी के बाद देश की उन्नति के लिए और विभिन्न शक्लों में इसको आगे बढ़ाने के लिये उपाय किये गये, कमीशन बिठाए गये, योजनाएं बनायीं गयीं, जिसके परिणाम में ये देश आज दुनिया में एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। विज्ञान व तकनीकी क्षेत्र में भी इसने अपना लोहा मनवाया है। लेकिन बड़े अफ़सोस की बात है कि कई ऐसी कमियाँ यहाँ पैदा हो गयीं हैं या पैदा कर दी गयी हैं जो अन्दर ही अन्दर इसको कमज़ोर करती चली जा रही हैं और इसका डर पैदा होता जा रहा है कि कहीं ये देश ग़ुलामी के गढ़े में न चला जाये।

इन कमज़ोरियों में दो बातें बहुत गंभीर हैं जो दीमक की तरह इस देश को चाटती चली जा रही हैं, एक साम्प्रदायिक तनाव और दूसरे इस्राईल से बढ़ते हुए वे संबंध जो देश के लिये ख़तरनाक बन चुके हैं।

हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच जो खाई विदेशियों ने स्थापित की थी, वह आज तक पाटी न जा सकी और उसका आधारभूत कारण ये है कि अंग्रेज़ो ने जाते-जाते ऐसे बीज बो दिये जिसके द्वारा यहां के बहुसंख्यकों और बड़े अल्पसंख्यकों के बीच कांटो की ऐसी बाढ़ तैयार हो गयी है कि कोई एक दूसरे के क़रीब आने को तैयार नहीं। एक अंग्रेज़ लेखक ने ये बात हक़ीक़त पसंदी प्रकट करते हुए कह दी कि हम तो चले गये लेकिन हमने यहां का इतिहास ऐसा बना दिया है कि यहां की दो बड़ी आबादियों के ज़हन कभी मिल नहीं सकते। बहुत ही अफ़सोस की बात है कि हम इस साम्राज्यी साज़िश का पर्दा अब तक न चाक कर सके और उनके द्वारा जो कांटे बोये गये थे हम उनकी जगह फूलों के बीच तैयार न कर सके। इस समय की बड़ी मांग ये है कि आपस की खाई पाटने का प्रयास किया जाये और उन ग़लतफ़हमियों को दूर किया जाये जो एक वर्ग विशेष की ओर से पैदा की जा रही हैं, जो वास्तव में उस साम्राज्यी व्यवस्था ही का हिस्सा है जो ऊपर से तो चला गया लेकिन अन्दर ही अन्दर उसकी जड़े फैल रही हैं।

दूसरी बहुत गंभीर समस्या जिसकी ओर ध्यान देने की बहुत आवश्यकता है वह उस नस्ल से बढ़ते हुए संबंध हैं, वह क़ौम जो वास्तव में मानवता की दुश्मन है। दुनिया में जिसके तरीक़े से एक तूफ़ान खड़ा हुआ है और शासनों ने जिससे परेशान होकर अपना दामन छुड़ाया और आज भी अपने मक़नन अव्वल की बात याद करता है कि अगर यहूदियों को यहाँ मौक़ा दिया गया तो वह दिन दूर नहीं कि जब वे आक़ा और यहां के लोग ग़ुलाम होंगे। आज इस क़ौम को पर्दे के पीछे से इस देश के सियाह व सफ़ेद का मालिक बनाया जा रहा है और विभिन्न विभागों में वहां के माहिरों ने विभिन्न स्तरों से उन्नति के नाम पर आकर काम कर रहे हैं और धीरे-धीरे उनकी पकड़ मज़बूत होती जा रही है और डर ये पैदा हो गया है कि कहीं ईस्ट इण्डिया कम्पनी का भयानक ख़्वाब दोबारा दूसरी शक्ल में सामने आने वाला तो नहीं है। ये ख़तरा पूरे देश बल्कि पूरी मानवता के लिये है। उस पर ये कि इन कम्पनियों को खुली छूट दे दी गयी है, जो चाहे यहां आकर अपना डेरा जमाए और यहां के लोगों को बंधुआ मज़दूर बनाए और यहां के ज़हीन लोग मजबूर होकर दूसरे देशों की ख़िदमत करने पर मजबूर हों। से स्थिति बहुत गंभीर है। इसका हल केवल यही है कि यहां की आबादी को एक इकाई बनाया जाये और मानवता के रिश्ते में सबको जोड़कर देश की उन्नति में लगाया जाये और विदेशी ताक़तों से होशियार रहा जाये कि कहीं ये देश जो एक अर्से तक ग़ुलाम रहने के बाद आज़ाद हुआ, वह दोबारा ग़ुलामी के शिकंजे में न चला जाये।

इस्लामी दुनिया की वर्तमान पीड़ा और उसका परिदृश्य

मौलाना सैय्यद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी

पन्द्रहवीं सदी हिजरी के आरम्भ में इस्लामी जागरुकता की संभावनाएं प्रकट हुईं और ये जागरुकता एक स्वाभाविक बात थी। यूरोप व अमरीका की इस्लाम दुश्मनी के कारणवश, वैचारिक व सांस्कृतिक आक्रमण के कारणवश और यूरोप का इस्लामी दुनिया पर साम्राज्यी तिलिस्म स्थापित करने के लिये मीडिया के प्रयोग के कारणवश। अल्लाह तआला ने इस्लामी दुनिया को हर प्रकार से मालामाल किया है। यूरोप का इस जागरुकता के विरुद्ध पक्ष ख़ौफ़ व बुज़दिली का था। इस भय में और बढ़ोत्तरी हुई इस्लाम की दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई प्रसिधी से। जबकि ईसाई मिशनरियां ईसाईयत के प्रचार के लिये भरपूर साधनों का प्रयोग कर रही थीं जैसे शिक्षा व प्रशिक्षण, मीडिया का प्रयोग, ग़रीब क्षेत्रों की ख़बर लेना और ग़रीबों की मदद करना, और इसमें उनकी मदद इस्लाम विरोधी ज़हन रखने वालों और मुसलमानों ने भी की जो इस्लाम से विद्रोह कर चुके हैं और जिनका ज़हन यूरोपीय विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने के कारणवश बिल्कुल बदल चुका था। उन्होंने इस दीन के ख़िलाफ़ खोजे प्रस्तुत कीं, लेख लिखे, लेकिन इस ज़बरदस्त इस्लाम विरोधी मुहिम के बावजूद इस्लाम से जुड़ाव और दीनी व इस्लामी ग़ैरत व हमीयत में बढ़ोत्तरी हो रही है। यूरोप के दुश्मनी वाले रवैये और दीन से बेज़ार केवल नाम के मुस्लिम शासकों की अज्ञानता और सभी साधनों के द्वारा इस्लामी जागरुकता को समाप्त करने की मुहिम ने इस्लामी दुनिया में संगीन हालात पैदा कर दिये।

इस जागरूकता का असर मस्जिदो में नमाज़ियों की अधिकता और ज़िक्र की मजलिसों में नज़र आया। इस्लामी शिक्षाओं को जानने का शौक़ और उसकी शिक्षाओं पर अमल करने की भावना पश्चिमी विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त कर रहे नौजवानों में विशेष रूप से बढ़ा। वे यूनिवर्सिटीयों में शिक्षा प्राप्त करते और इस्लाम से परिचित होने का प्रयास करते, दीनी प्रशिक्षण के हल्क़ों में भाग लेते और उन जमाअतों से जुड़ते जो इस्लामी दावत का काम अंजाम दे रही थीं। ये रूझान बहुत तेज़ी से बढ़ा, इसलिये कि वे छात्र जो पिछली सदी में यूरोपीय शिक्षा के कारण से जाते थे, वे वहां के कार्यों व विचारों के हामी होकर वतन वापिस होते थे, यहां तक कि उनका रहन–सहन, खाना–पीना भी यूरोप के लोगों के तरीक़े पर होता था, लेकिन वर्तमान सदी में वे यूरोप जाते हैं किन्तु इस्लामी विशेषताओं के साथ वापिस आते थे।

इस जागरुकता के प्रभाव बहुत ही स्पष्ट थे और इस जागरूकता से उन इस्लामी तहरीकों ने लाभ उठाया जो यूरोप में काम कर रहीं थीं। उम्मीद की जा रही थी कि इस्लामी दुनिया का भविष्य प्रकाशमान व रोशन है। इसी कारण से कुछ इस्लामी लेखकों ने, "भविष्य इस दीन का है" के विषय से किताबें लिखीं, आशा ये थी कि साम्राज्यी व्यवस्था और जो इसकी पैरवी करते हैं उनका पतन बहुत जल्द होगा। ये बद यही स्वाभाविक बात है, इस सोच को इससे ताक़त मिलती है कि कुछ इस्लामी देशों में क्रान्तियाँ हुईं और इस्लामी सोच रखने वालों ने सत्ता की बाग़डोर संभाल ली, जैसे अफ़्रीक़ा और एशिया के बहुत से देशों में हुआ।

यूरोप ने इस जागरूकता के ख़तरे को महसूस कर लिया और उसने इस रूझान को अपने लाभों के लिये और अपना क़ब्ज़ा बरक़रार रखने के लिये प्रयोग किया और इस जागरुकता और इस्लामी हमीयत को इस समय पेश समस्याओं के हल के विषय से बदलने के लिये साज़िशें कीं।

"इससे पहले हमको यहूदियों से ख़तरा था, चीन व जापान से ख़तरा था, लेकिन हमने उनको अपना हमनवां और दोस्त पाया, और दूसरे विश्वयुद्ध में जो हमारे दुश्मन थे, वे भी हमारे दोस्त बन गये, जहां तक चीन व जापान का संबंध है वे एक धर्मनिरपेक्ष देश हैं, लेकिन वास्तविक ख़तरा मुसलमानों से है, क्योंकि उनकी ताक़त में गहरायी है, वे अपनी ज़िन्दगी में हैरतअंगेज़ चीज़ों के मालिक हैं।"

एक बार 1952ई0 में फ़्रांस के एक ज़िम्मेदार ने कहाः "यूरोप को क्म्यूनिज़्म से ख़तरा नहीं, अस्ल ख़तरा हमको जो है और जिसने हमको हिला कर रख दिया है, वह ख़तरा इस्लामी जागरूकता का है। मुसलमान एक स्वयंभू क़ौम है, उनके पास आत्मिक शक्ति हैं, एक ऐतिहासिक सभ्यता के मालिक हैं, और उनको ये बात शोभा देती है कि प्रकाशमय इतिहास के द्वारा एक नयी दुनिया का निर्माण करे, उनको यूरोप की चीज़ों की ज़रूरत नहीं, उनको अपने सपनों को पूरा करने के लिये उस कारोबारी उन्नति की आवश्यकता है, जो यूरोप ने प्राप्त कर ली है।" (शेष पेज 6 पर)

अर्श–ए–इलाही के साये में

मौलाना अब्दुल्लाह हसनी नदवी

क़यामत के दिन जब गर्मी का सख़्त आलम होगा, और सूरज की तमाज़त वाली कैफ़ियत होगी, उस वक़्त अच्छे–अच्छे हैरान व परेशान होंगे और सब अपने–अपने पसीने में अपने आमाल के बराबर होंगे, अतः उसी समय अल्लाह तआला की तरफ़ से आवाज़ आयेगी कि मेरी महानता की वजह से मुहब्बत करने वाले लोग कहाँ हैं, आज मैं उनको साया दूंगा, अतः उस दिन अल्लाह के साये में जिन लोगों को साया नसीब होगा, उनके बारे में हदीस में आता है कि वो सात तरह के ख़ुश क़िस्मत लोग होंगे।

इन्साफ़ करने वाला हाकिम

नम्बर एक इन्साफ़ करने वाला इमाम है, यानि ऐसा बादशाह या शासक जिसके हाकिम होने की उसके एक एक आदेश की पूर्ति की जाती है, क्योंकि उसके पास हर प्रकार के साधन होते हैं, दुनिया का माल व सामान, जाहो जलाल भी मौजूद है, इसलिये वह उसके साथ जो सुलूक करना चाहे वो सुलूक कर सकता है। लेकिन इसके बावजूद अगर कोई शासक इन्साफ़ को रौंदता नहीं है और बेइन्साफ़ी नहीं करता है और इन्साफ़ के साथ काम करता है, जिसका जो हक़ है उसको अदा करता है, न ज़्यादती का शिकार है न कमी, तो ऐसे हाकिम का स्थान सबसे ऊँचा है और अर्श के साये में सबसे पहले उसको साया नसीब होगा, जिसका बुनियादी कारण ये है कि उसके पास सभी साधन मौजूद हैं, वह जिसके साथ जो चाहे कर सकता है, लेकिन उसके बावजूद भी वह कोई काम नहीं करता है, बल्कि जो काम इन्साफ़ के साथ होना चाहिये वही करता है।

इबादत गुज़ार नौजवान

नम्बर दो वह नौजवान है, जिसके अन्दर पूरी तरह जवानी पायी जाती हो और जवानी के जितने असबाब हों वो सब मुहैया हों, लेकिन उसके साथ–साथ वह अल्लाह की इबादत में परवान चढ़ा हो, लिहाज़ा ऐसे नौजवान को अल्लाह अपने साये में जगह देगा। इसलिये कि जवानी की इबादत भी जवान होती है और बुढ़ापे की इबादत बूढ़ी होती है। मानों दोनों की इबादतों में अन्तर है। यद्यपि जिसने जवानी ही से इबादत की तो उसको सदा जवानी हासिल रहेगी। ,लेकिन अगर किसी ने जवानी में इबादत नहीं कि, बुढ़ापे में की तो उसकी इबादत चाहे कैसी हो, लेकिन बूढ़ी रहेगी। ग़रज की जो जवान अल्लाह की इबादत में लगता है, उसकी बात बहुत अनोखी है, क्योंकि जवानी के दिन खेलने, टहलने, रंगरलियां मनाने के समझे जाते हैं, इसीलिये जवानी से जुड़ी हुई हदीस में ये भी आता है कि जवानी जुनून यानि पागलपन का एक हिस्सा है, इसीलिये आम तौर पर इन्सान अपनी जवानी को ग़लत जगह पर ख़र्च करता है, बहुत कम ऐसे लोग होते हैं जो जवानी को सही जगह पर लगाते हैं।

दिली लगाव

तीसरा वह व्यक्ति है जिसका दिल हमेशा मस्जिद से लटका रहता हो यानि किसी इन्सान का दिल मस्जिद से निकलते ही मस्जिद की फ़िक्र में रहे। ये न हो कि ये न हो कि उस शख़्स का दिल बाज़ार में लगा रहे। जैसा कि आजकल होता है। इसीलिये ध्यान रहे कि अल्लाह के रसूल स0अ0 ने फ़रमायाः "सबसे बुरी जगह बाज़ार है, सबसे अच्छी जगह मस्जिद है।" जिससे ये भी मालूम हो गया कि जिस व्यक्ति का दिल सबसे अच्छी जगह से लगा रहेगा, वरना अगर किसी का दिल सबसे बुरी जगह से लगा रहा और उसी को पसंद करता रहा तो उसका दिल सबसे बुरा होगा। इसलिये जिसका दिल मस्जिद में लगा रहता है तो वह चूंकि सबसे अच्छे दिल वाला होता है, लिहाज़ा उसकी जगह भी सबसे श्रेष्ठ होती है और अल्लाह के अर्श का साया उसके लिये तय होता है, जैसा कि हदीस से मालूम होता है।

अल्लाह के लिये मुहब्बत

नम्बर चार पर ऐसे दो वो व्यक्ति है जो अल्लाह के लिये आपस में मुहब्बत करने वाले हों और अल्लाह ही के लिये मिलने वाले हों और अल्लाह ही के लिये जुदा होने वाले हों। लिहाज़ा अगर कोई इस दर्जे की मुहब्बत करने वाले होंगे तो उनसे मिलने में भी ख़ास बरकत होगी और जुदा होने में भी ख़ास बरकत होगी। इसीलिये ऐसे दो खुशनसीब लोगों के बारे में फ़रमाया गया कि उनको अल्लाह के अर्श का साया नसीब होगा।

पाकदामन इन्सान

पांचवां वह व्यक्ति है जिसको ख़ूबसूरत औरत बुराई की दावत दे और वो औरत माल व दौलत वाली भी हो, यानि एक तरफ़ तो वो हसीन व जमील भी हो लेकिन इसके साथ–साथ ओहदे वाली भी हो और ख़ानदानी हसब व नसब की औरत हो, और किसी बड़ी जगह से उसका संबंध हो, लेकिन इस पर वो शख़्स ये कह दे कि अल्लाह से डरता हूँ, इसलिये ऐसा ग़लत काम नहीं कर सकता, तो ऐसे व्यक्ति को भी अल्लाह अपने साये में जगह देगा।

छिपा कर सदक़ा करने वाला

छठा वो व्यक्ति है जो इस तरह छिपाकर सदक़ा करे कि उसके बायें हाथ को भी ख़बर न हो सके कि दाहिने हाथ ने क्या दिया है, क्योंकि अल्लाह तआला के नज़दीक़ वही सदक़ा काबिले कुबूल होता है जिसमें किसी को तकलीफ़ न पहुंचायी जाये और न किसी पर एहसान जताया जाये बल्कि अपने ऊपर अल्लाह का बहुत करम समझा जाये कि उसने हमको ऐसे लोगों से मिला दिया जिनको हम सदक़ा दे सकें। जिनके पास हम ज़कात को ख़र्च कर सकें। मानो ये काम अल्लाह का हम पर बहुत बड़ा एहसान है। अगर सदक़ा इत्यादि देते समय इन्सान के ज़हन में ये बात रहेगी तो इन्सान के दिल में कोई बुरी बात पैदा नहीं होगी और न ही उसके दिल में ऐसा ख़्याल आयेगा कि मुझे बहुत माना जाये, लिहाज़ा जो व्यक्ति अपने दिल से ये बात निकाल देगा, तो उसका मक़ाम बहुत बुलन्द हो जायेगा, और उसके अर्श का साया नसीब होगा।

तन्हाई में रोना

सातवां वो व्यक्ति है जो अल्लाह को तन्हाई में याद करे और उसकी आंखे बह पड़े। यानि ऐसा न हो कि मजमें में खूब रोता हो, जैसा कि आजकल रिवाज सा चल पड़ा है। हालांकि इस्लाम में रिवाज की कोई हैसियत नहीं है। इसलिये रिवाजी रोना पसंद नहीं है। अलबत्ता तन्हाई में इन्सान का रोने जैसी सूरत बनाना, ये अल्लाह को बहुत पसंद है, लेकिन अगर किसी के तन्हाई में एक आंसू भी न हों और मजमें में ख़ूब रोता हो, तो ये पसंदीदा बात नहीं है, लेकिन आज कल ये भी एक फ़न चल गया है जबकि अल्लाह को फ़नकारी पसंद ही नहीं है, क्योंकि ऐसा रोना, रुलाना और मजमें में रोने जैसा माहौल बनाना इस्लाम में कुछ नहीं है। इस्लाम में हर चीज़ फितरी और सही है।

शेष : इस्लामी दुनिया की वर्तमान पीड़ा ....

सन् 1990ई0 के दौरान हेनरी केसन्जर (पूर्व अमरीकी विदेश मंत्री) ने वार्षिक राष्ट्रीय व्यापार में अपने भाषण मे कहाः "नयी जंग जिसका यूरोप को सामना है वह अरबी इस्लामी जंग है, ये यूरोप के लिये और पूरी दुनिया के लिये बहुत बड़ा ख़तरा है।"

यहूदी चिन्तक सैमुअल फ़िलिप ने अपनी किताब, "सभ्यताओं का टकराव" में और वेटिकन ने अपनी सालाना रिपोर्ट में लिखा है कि ईसाई मिशनरियों की अनथक मेहनतों और कोशिशों के बावजूद इस्लाम बहुत तेज़ी से फैल रहा है और ईसाईयत के लिये इस्लाम ही ख़तरा है।

जर्मन चिन्तक रेगरेड ने अपनी किताब, "इस्लाम का सूरज यूरोप पर उदय हो रहा है" के द्वारा यूरोप को होशियार करने का प्रयास किया है।

यूरोप के शासकों ने इस इस्लामी जागरूकता को रोकने और उसका मुक़ाबला करने की फ़िक की, यूरोप ने इस ख़तरे का सामना करने के लिये एक कमेटी बनायी ताकि इस पर ग़ौर किया जाये इस रेंड नामी कमेटी ने इस्लामी दुनिया के संबंध से खोज के लिये एक रिपोर्ट तैयार की और उसको 2005ई0 में अमरीकी शासन के पास भेज दिया ताकि वे एक कार्यप्रणाली बनाएं। उसने ये उपाय दिया कि मुसलमानों में नफ़रत का बीज बोया जाये, गृहयुद्ध कराए जायें, अरब व ग़ैर अरब के बीच के संबंध को नाख़ुशगवार बनाया जाये। इन सभी कोशिशों का नतीजा ये निकला कि मुसलमान फूट व बिखराव का शिकार हो गये, एकता का दामन हाथ से छूट गया इस्लामी देशों में ग़ैर इस्लामी ज़हन रखने वालों ने शासन संभाल लिया और इस्लाम पसंदो को जेलों में डालना यूरोप की इसी कार्यप्रणाली का नतीजा है।

आवश्यकता इस बात की है इस्लामी देश यूरोप की इन साज़िशों को समझें, होश के नाख़ून लें और इन क्रान्तियों के पीछे जो सहयूनी साज़िशें हैं वे उनसे बाख़बर हों, और इसको तर्क करें, आस्तीन के सांपो को पहचानें और उनकी कोशिशों को नाकाम करें, लेकिन मुस्लिम शासक सही स्थिति को समझने और योजना बनाने में असफल प्रतीत हो रहे हैं, जानों का नुक़सान कोई बड़ी पीड़ा नहीं है बड़ी पीड़ा ये है कि इसके कारणों पर विचार न किया जाये और लगातार आने वाले हालात से सबक़ न लिया जाये।

इस्लामी अक़ीदा

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

आख़िरत का अक़ीदा इस्लाम के तीन बुनियादी अक़ीदों में से एक है। जब तक आख़िरत का यक़ीन न हो और इन्सान इसको दिल से मान न ले, उस वक़्त तक वो मुसलमान नहीं हो सकता है। सूरह बक़रह के शुरूआत ही में तक़वे वालों की जो विशेषतांए बयान हुईं हैं, उनमें सबसे ज़्यादा अहमियत के साथ आख़िरत पर ईमान का तज़किरा है। इरशाद होता हैः "और आख़िरत को यही (लोग) यक़ीन जानते हैं" (सूरह बक़राः 04)

इन्सान की ज़िन्दगी में अल्लाह के डर के बाद सबसे गहरा असर जो पड़ता है वो आख़िरत के यक़ीन का है। जिसको जितना ज़्यादा आख़िरत का ख़्याल रहता है उसके आमाल व अख़लाक़ उसी के एतबार से पड़ते हैं। कुरआन मजीद में तौहीद के अक़ीदे के बाद सबसे ज़्यादा आख़िरत के ध्यान की दावत दी गयी है। इसका आधारभूत कारण यही है कि तौहीद और आख़िरत ही इन्सान की ज़िन्दगी में बदलाव पैदा करने और उनको सही रुख़ पर लाने की सबसे ताक़तवर बुनियादें हैं। अगर ये बुनियादें न हों तो ख़ुश्क होकर रह जाये और केवल दुनिया के फ़ायदे व नुक़सान के और कोई चीज़ इन्सान के अन्दर हरकत पैदा करने वाली न हो। जिस प्रकार तौहीद के पाठ में ये बात गुज़र चुकी है कि उसकी तफ़सील का इल्म सिर्फ़ अल्लाह के रसूल स0अ0 से ही होता है। आख़िरत के इल्म का भी सिर्फ़ एक ही ज़रिया है, और वो केवल अम्बिया अलै0 हैं। जिनके इमाम सैय्यदना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह स0अ0 हैं, जिनके ज़रिये से आख़िरत की तफ़सील मालूम होती है। अगर नबियों की तालीमें न हों तो इन्सान आख़िरत के सिलसिले में भटकता ही रहेगा।

अल्लाह तआला फ़रमाता हैः "बता दीजिए कि आसमानों और ज़मीनों में ढकी छिपी चीज़ का जानने वाला कोई नही, सिर्फ़ अल्लाह है और उनको उसकी ख़बर भी नहीं कि वे कब उठाये जायेंगे। बात ये है कि आख़िरत के बारे में उनका इल्म बिल्कुल ठप पड़ गया है, बल्कि वे उसके बारे में शुब्हे में हैं (वाक़्या ये है) कि वे इस सिलसिले में अन्धे हैं।" (सूरह नमल)

अब आख़िरत के यक़ीन के बाद इन्सान अपने अन्दर क्या बदलाव लाये और क्या तरीक़ा अपनाये। इसका सही रास्ता मालूम करने का भी केवल एक ही रास्ता है जिसका संबंध रिसालत के अक़ीदे से है। अल्लाह तआला की मर्ज़ी मालूम करने का इसके अलावा कोई रास्ता नहीं। रसूलों ही से इन्सान को हिदायत मिलती है। जिनमें आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद स0अ0 को अल्लाह तआला ने सारी दुनिया की हिदायत के लिये भेजा है। ये सब वो अक़ीदे हैं जो इन्सानों को सही रूख़ देते हैं। उसके जीवन में सुधार की क्रान्ति लाते हैं। और उसको अस्ल कामयाबी दिलाते हैं। अगर ये तीनों अक़ीदे कमज़ोर हों तो इन्सान की ज़िन्दगी भी दुनिया के थपेड़ों में घिर कर रह जाती है। और उसी उतार व चढ़ाव में वो अपनी उम्र पूरी करके मौत के घाट उतर जाता है। और दूसरी ज़िन्दगी उसकी बद से बदतर होगी। जहां सिवाये हसरत व मायूसी के कुछ उसके साथ न टिक सकेगा।

आख़िरत के माने आख़िर में आने वाली चीज़ के हैं। कुरआन मजीद में ये शब्द 113 जगहों पर आया है। कई जगहों पर ये शब्द केवल "आख़िरत" आया है और बहुत सी जगहों पर और स्पष्ट रूप से इसका इस्तेमाल हुआ है। इरशाद होता हैः "और ये दुनिया की ज़िन्दगी बस खेल और तमाशा है और अस्ल ज़िन्दगी तो बस आख़िरत का ही घर है, काश कि वो जान लेते" (अनकबूतः 64)

इन इस्तेमालों से पूरी बात साफ़ हो जाती है कि जहां कहीं भी आख़िरत का शब्द तन्हा प्रयोग हुआ है उससे भी मुराद आख़िरत या आख़िरत की ज़िन्दगी है। इसके मुक़ाबले हमारी मौजूदा ज़िन्दगी को "दुनिया की ज़िन्दगी" कहा गया है। दुनिया के माने क़रीब के हैं, ये ज़िन्दगी या ये घर हमारे सामने है और हमसे क़रीब है, और वो दूसरा घर या दूसरी ज़िन्दगी निगाहों से अभी दूर है वही अस्ल और आख़िरी ज़िन्दगी है, जिसको आख़िरत कहते हैं। ये दुनिया की ज़िन्दगी अल्लाह तआला ने आख़िरत की ज़िन्दगी के लिये बनायी है। और वहां की सफलता व असफलता का दारोमदार यहां की ज़िन्दगी पर रखा है। इसीलिये एक हदीस में ये शब्द आये हैंः "दुनिया आख़िरत की खेती है।" इन्सान जैसी खेती यहां करेगा, उसका उसके अनुसार वहां बदला मिलेगा। ये एक बेहतरीन मिसाल है। जिससे बात समझाई गयी है कि जो जितना ज़्यादा रसूलुल्लाह सअ00 के बताए हुए तरीक़े के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारेगा, वह उतना ही ज़्यादा कामयाब होगा। इसीलिये इस दुनिया को इम्तिहान की जगह भी कहा गया है।

आख़िरत की इस ज़िन्दगी का यक़ीन करना और जानना कि इस दुनिया की ज़िन्दगी के बाद एक और ज़िन्दगी है जो हमेशा के लिये होगी और उसमें आदमी को किये के मुताबिक़ बदला मिलेगा। इस्लाम के तीन बुनियादी अक़ीदों में से तीसरा अक़ीदा है जिसको आख़िरत का अक़ीदा कहते हैं।

माहवारी के कुछ एहकाम

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

बालिग़ होने के बाद औरतों की शर्मगाह से ख़ून आना शुरू होता है। जो अल्लाह तआला के फ़ितरी निज़ाम के तहत है। नबी करीम स0अ0 ने इसके बारे में फ़रमायाः "ये ऐसी चीज़ है जो अल्लाह तआला ने आदम अलै0 की बेटियों पर मुकर्रर कर दी है।" (बुख़ारी/मुस्लिम)

इसका सिलसिला बालिग़ होने से शुरू होता है और बालिग़ होने की कोई तय उम्र नहीं है। इसलिये कि इसका दारोमदार वातावरण, खाद्य पदार्थ और इन्सानी मिज़ाज पर होता है। लेकिन फुक्हा ने लिखा है कि ये ख़ून 9/साल से पहले नहीं आ सकता है। अगर इससे पहले आये तो ये फ़ितरी निज़ाम के तहत आने वाला ख़ून यानि हैज़ नहीं है बल्कि किसी बीमारी के तहत है लिहाज़ा इस पर हैज़ के एहकाम जारी नहीं होगें। (हिन्दियाः 1/36)

इस ख़ून का आना औरत के सेहतमन्द होने की पहचान है। इसका न आना या आने में किसी रूकावट का पैदा होना बीमारी की अलामत है। इसीलिये हकीम इत्यादि सख़्ती से मना करते हैं कि इसको रोकने की कोशिश न की जाये। वरना बड़ी–बड़ी बीमारियों के पैदा होने का ख़तरा रहता है। इसी ख़ून से मां के पेट में बच्चे की बढ़ोत्तरी होती है। इसीलिये गर्भ की हालत में इस ख़ून का आना बन्द हो जाता है। इसके कुछ ज़रूरी एहकाम हम नीचे लिख रहे हैं। ये ये बात साफ़ करना ज़रूरी है कि हैज़ के कुछ एहकाम हैं, कई बार बड़ी बारीकियां पैदा हो जाती हैं, जिनको लिखना मुनासिब भी नहीं मालूम होता है, लिहाज़ा अगर बहनों को इस सिलसिले में कोई परेशानी महसूस हो तो किसी मोतबर आलिम से अपने घरवालों के ज़रिये मालूमात हासिल कर लिया करें।

हैज़ की परिभाषाः हैज़ (माहवारी) का शाब्दिक अर्थ सीलान यानि बहने का है। और शरीअत की इस्तलाह में उस ख़ून को कहते हैं जो बालिग़ औरतों की शर्मगाह से हर माह (नौ साल से लेकर पचपन साल की उम्र तक) आता है। (शामीः 207/1, हिन्दियाः 1/36)

हैज़ का अधिकतम व न्यूनतम समयः हैज़ की कम से कम मुद्दत तीन दिन तीन रात है, और ज़्यादा से ज़्यादा मुद्दत दस दिन दस रात है। (हिन्दियाः 1/36, शामीः 1/37)

इसीलिये दारेकुतनी में हज़रत अबूअमामा बाहली रज़ि0 नबी करीम स0अ0 से रिवायत करते हैं कि आप स0अ0 ने फ़रमायाः "कुंवारी और शादीशुदा दोनों का हैज़ कम से कम तीन दिन होता है और ज़्यादा से ज़्यादा हैज़ दस दिन होता है।"

इससे मालूम होता है कि अगर किसी औरत को एक दिन या दो दिन ख़ून आकर बन्द हो गया तो ये हैज़ का ख़ून नहीं है, न ही उस परहैज़ के एहकाम जारी होंगे, इसी तरह दस दिन से ज़्यादा ख़ून आये तो ये भी हैज़ का ख़ून नहीं होगा, न ही उस पर हैज़ के एहकाम जारी होंगे। (हिन्दियाः 1/36)

पाकी का अधिकतम व न्यूनतम समयः एक हैज़ के ख़त्म होने के बाद जब औरत हैज़ से पाक हो जाती है तो पाकी के उस ज़माने को "तहर की मुद्दत" कहा जाता है। पाकी की कम से कम मुद्दत पन्द्रह दिन मुकर्रर की गयी है। इसका मतलब ये है कि किसी औरत को तीन दिन या उससे ज़्यादा का हैज़ आया, फिर पन्द्रह दिन गुज़रे भी नहीं थे, सिर्फ़ बारह–तेरह दिन गुज़रे थे कि दोबारा फिर ख़ून आने लगा तो ये हैज़ का ख़ून नहीं है। बीमारी की वजह से है, लिहाज़ा इस पर हैज़ के एहकाम जारी नहीं होंगे, यद्यपि अगर एक बार तीन दिन या उससे ज़्यादा का हैज़ आया, फिर पन्द्रह दिन पाकी रही उसके बाद फिर ख़ून आने लगा तो दूसरा हैज़ माना जायेगा। (शामीः 1/209)

पाकी के अधिकतम समय की कोई हद बन्दी शरीअत में नहीं की गयी है, लिहाज़ा जब तक उसको ख़ून नहीं आ रहा है, उसे पाक समझा जायेगा, यहां तक कि अगर पूरी उम्र ख़ून न आये तो पूरी उम्र उसको पूरी उम्र पाक समझा जायेगा।

हैज़ के ख़ून का रंगः हैज़ की मुद्दत के अन्दर सुर्ख ज़र्द, हरा, मटियाला, काला और गुदला जिस रंग का भी खून आये वह हैज़ ही माना जायेगा। लेकिन अगर सफ़ेद माद्दा निकले तो वह हैज़ नहीं है। (शामीः 1/211)

इसलिये कि हज़रत आयशा रज़ि0 के पास औरतें थैली में शर्मगाह पर रखी जाने वाली रूई इत्यादि रखकर भेजती थीं जिस पर ज़रदी होती थी तो हज़रत आयशा रज़ि0 फ़रमाती थीं: "जल्दी न करो यहां तक कि सफ़ेद रूई देख लो।"

जब ख़ून आदत के दिनों से बढ़ जायेः अगर किसी औरत के हैज़ की आदत तीन चार या पांच दिन थी, फिर किसी महीने में उससे ज़्यादा दिन तक ख़ून आया, तो उसकी दो

शक्लें होंगी, और दोनों के एहकाम अलग हैं:

1. अगर दिन आदत से बढ़ने के साथ–साथ ये ख़ून दस दिन से भी बढ़ गया तो हैज़ सिर्फ़ आदत के दिनों के दौरान आने वाले ख़ून को क़रार दिया जायेगा। इससे बढ़ जाने वाले सभी दिनों का ख़ून इस्तहाज़ा यानि बीमारी का ख़ून होगा और उसके एहकाम हैज़ के नहीं होंगे।

2. दूसरी सूरत ये होगी कि आदत के दिनों से तो ख़ून बढ़ा लेकिन दस दिनों के अन्दर–अन्दर रहा, दस दिन से नहीं बढ़ा तो ये सभी दिन हैज़ के होंगे और ये माना जायेगा कि इस औरत की हालत बदल गयी है। (शामी: 208–209/1)

और अगर किसी लड़की को पहली ही बार ख़ून आया और दस दिन से बढ़ गया तो दस दिन हैज़ के होंगे और बाकी सभी दिन बीमारी यानि इस्तहाज़ा के होंगे।

अगर ख़ून रुक–रुक आये: अगर तीन दिन या उससे ज़्यादा दिन ख़ून आये, फिर पन्द्रह या पन्द्रह दिन से ज़्यादा तक पाकी रहे, इसके बाद तीन दिन या उससे ज़्यादा ख़ून आये तो शुरू और बाद में आने वाला ख़ून हैज़ का माना जायेगा और पन्द्रह दिन पाकी के माने जायेंगे और अगर शुरू या बाद में आने वाला ख़ून तीन दिन से कम जारी रहे तो वो इस्तहाज़ा का ख़ून माना जायेगा और इस पर हैज़ के एहकाम जारी नहीं होंगे।

और अगर किसी ऐसी औरत ने जिसको महीने के किसी ख़ास हिस्से में ख़ून आया करता था, अपने आदत के दिनों से एक दिन पहले ख़ून देखा, फिर दस दिन तक पाक रही, फिर एक दिन फिर ख़ून देखा तो उसकी आदत के सभी दिन हैज़ की हालत के समझे जायेंगें, जबकि उन दिनों में ख़ून नहीं आया है। उसके बावजूद ये हुक्म होगा। इसी से समझा जा सकता है कि हैज़ के दिनों में ख़ून न आये तब भी औरत शरीअत के एतबार से हैज़ की हालत में होती है। शर्त ये है कि पाकी से पहले और बाद में दम आया हो और पाकी की मुद्दत चौदह दिन से कम रही हो। (शामी: 212/1)

हैज़ के ख़ास एहकाम: हैज़ की हालत में निम्नलिखित चीज़ें शरीअत में मना हैं।

1– हैज़ की हालत में बीवी से सम्भोग करना हराम है। जब तक वो पाक न हो जाये। साथ में खाना, पीना, लेटना जायज़ है, लेकिन सम्भोग की मनाही है। इसलिये कि कुरआन मजीद में है:

"वे आपसे हैज़ के बारे में सवाल करते हैं, आप फ़रमा दीजिए कि वो एक गन्दगी है, तो हैज़ में औरतों से अलग रहो, और वो जब तक पाक न हो जायें उनको क़रीब मत करो, तो जब वो पाक हो जाएं तो जैसे तो जैसे अल्लाह ने तुम्हें बताया है उसके मुताबिक़ तुम उनसे संबंध स्थापित करो।" (सूरह बक़रा: 222)

अगर किसी से ये गुनाह हो जाये तो वह अल्लाह से तौबा व इस्तिग़फ़ार करे, वाजिब तौर पर इसका कोई कफ़्फ़ारा नहीं है, लेकिन हदीस में कफ़्फ़ारे का ज़िक्र आता है, लिहाज़ा मुस्तहब ये है कि ये गुनाह अगर गहरे सुर्ख़ रंग का ख़ून आने के ज़माने में हो जाए तो एक दीनार (4 ग्राम, 374 मिलीग्राम) सोना, और पीले रंग का ख़ून आने के ज़माने में हो जाए तो आधा दीनार (2 ग्राम, 187 मिलीग्राम) या उसकी क़ीमत ग़रीबों पर सदका करे।

2– नमाज़, हर तरह के सजदे, तिलावते कुरआन, तवाफ़, कुरआन मजीद छूना, और मस्जिद में दाख़िल होना हाएज़ा (ऐसी औरत जिसे हैज़ आ रहा हो) के लिये मना है। जबकि ज़िक्र, अज़कार और दुआ करना जायज़ है। यहां तक कि दुआ के तौर पर कुरआन की कोई आयत भी पढ़ सकती है।

अगर कुरआन पढ़ाने वाली मुअल्लिमा हैज़ की हालत में हो तो वो पूरी आयत के बजाए एक–एक कलिमा कर के पढ़ाए। (शामी213–215)

3– हैज़ की हालत में रोज़ा रखना भी मना है, लेकिन फ़र्क ये है कि रोज़ों की बाद में क़ज़ा करना ज़रूरी है, जबकि हैज़ के दिनों की नमाज़ें माफ़ हो जाती हैं और उनकी क़ज़ा नहीं है। (शामी: 231/1)

4– इस हालत में कुरआन मजीद लिखना मना है। इसी तरह किसी ऐसी किताब का लिखना भी मना है जिसकी बहुत सी लाइनों में कुरआन की बहुत सी आयतें लिखी हुई हों। (हिन्दिया: 39/1)

इसी तरह इस हालत में कुरआन करीम को टाइप मशीन में टाइप करना या कम्प्यूटर में कम्पोज़ करना भी मकरूह है। कुरआन करीम की महानता का तकाज़ा ये है कि कामिल पाकी के बाद ही उसका काम अन्जाम दिया जाये। (किताबुल मसाएल: 210/1)

5– जब ये हालत ख़त्म हो जाये तो गुस्ल करना फ़र्ज़ है। (हिन्दिया: 1/39) .....(शेष पेज 12 पर)

नशे से पाक समाज किंतु कैसे?

जनाब मुहम्मद आसिफ़ इक़बाल

टीका टिप्पणी करना एवं नुक़्स निकालना दो अलग अलग शब्द हैं, इसके बावजूद लेखो और भाषणों व अमली क़दमों में उन शब्दों के प्रयोग में इस बात का अन्दाज़ा लगाना मुश्किल हो जाता है कि व्यक्ति व समूह में किन अर्थों में अपनी बात रखी है। दूसरे शब्दों में, जो बात रखी गयी है वो नुक़्स निकाला गया है या टिप्पणी की गयी है?ठीक यही मामला क़ौमों और हुकूमतों के अमली रवैयों व क़दमों के सिलसिले में भी पेश आता है। इन सबके बावजूद ये बात बहुत साफ़ है कि टिप्पणी में मसला का हल दूसरे शब्द के रूप में मौजूद होता है। इसके विपरीत नुक़्स निकालने में ये मामला नहीं है लेकिन ये चक्र बहुत कठिन है कि जिस पर टिप्पणी की जा रही है वो उसको सुधार हेतु टिप्पणी समझता है या टिप्पणी हेतु टिप्पणी या टिप्पणी हेतु नुक़्स निकालने के अर्थ में?मामला ये है कि पानी जहां मरता है इसी परिदृष्य में सुधार हेतु टिप्पणी या नुक़्स हेतु टिप्पणी या टिप्पणी हेतु टिप्पणी के अर्थ में समझा और प्रकट किया जाता है। वास्तविकता ये है कि हर देश और समाज में हर ज़माने में बेशुमार मसले मौजूद रहे हैं। और मसले जितने गंभीर और सुधार योग्य हों उसी क़द्र या उससे कुछ ज़्यादा ही सुधार होना चाहिये। अगर ऐसा नहीं होता या अमली क़दम से इस बात का इज़हार नहीं होता कि मसले से निपटने के लिये सकारात्मक प्रयास अन्जाम दिये जा रहे हैं तो ये अमल ख़ुद इस बात की गवाही देता है कि समस्यांए जिनसे देश या समाज का सामना हैं, समस्या की समाप्ति के लिये वो ताक़तें और लोग मुख़लिस नहीं हैं जो इक़्तिदार में हैं। इस समस्या में विभिन्न स्तर पर की जाने वाली टिप्पणियों को नुक़्स के माने में लिया जाना आसान और कारगर हथियार साबित होता है। फिर उन लोगों और गिरोह के ख़िलाफ़ हर संभव तरीक़े से मोर्चा संभाला जाता है जो टिप्पणी बराए नुक़्स नहीं बल्कि टिप्पणी सुधार हेतु क्या चाहते हैं?

आज इस बात लगभग सभी ही सोचने समझने वाले लोगों की सहमति है कि पश्चिमी देशों की ओर से विभिन्न समस्याओं और ईशूज़ पर मनाये जाने वाले डेज़ साम्राज्यी ताक़तों की एक सोची समझी साज़िश है। जिसके पीछे इसके सिवा कोई उद्देश्य नहीं कारगर होता कि साम्राज्यी ताक़त और अधिक स्थायी व दृढ़ हों। कुछ इसी अन्दाज़ का दिन 26 जून 1987 को भी यूनाइटेड नेशन जरनल असेम्बली की ओर से मनाने का फ़ैसला लिया गया था। मक़सद दुनिया में बढ़ते नशे के कारोबार और उसके ज़रिये असीमित समस्याओं से जूझ रहे समाज को नजात दिलाना था लेकिन परिणाम इस बात के गवाह है कि जिन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये उस दिन को मनाये जाने का फ़ैसला किया गया था उसमें वो लोग आज तक कामयाब नहीं हो सके हैं जो कल भी और आज भी डे़ज़ मनाकर समस्या के समाप्ति के लिये सरगर्म रहा करते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय सतह से लेकर राष्ट्रीय सतह तक पिछले 26 जून 2014 नशा मुक्ति का दिन मनाया गया। उसी प्रकार से आयोजित एक प्रोग्राम से राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी ने सम्बोधित करते हुए कहा कि नशे के शिकार लोगों की पहचान, मार्गदर्शन, काउन्सिलिंग और नशे की लत छुड़ाने के साथ–साथ बाद में उनकी देख भाल और कई आबादकारी के लिये समाज पर आधारित सम्पूर्ण सेवांए उपलब्ध कराने की तुरन्त आवश्यकता है। शराब पीने और नशे की लानत ज़हनी, समाजी, ऐच्छिक समस्या है जिससे निपटने के लिये व्यापक तरीक़े की आवश्यका है। व्यापक इलाज व प्रोग्राम क मक़सद केवल प्रभावित लोगों की नशे की आदत छुड़ाने तक सीमित नहीं होना चाहिये, आवश्यकता इस बात की है कि नशे के शिकार लोगों को नशे से आज़ाद, जुर्म से आज़ाद और रोज़गार उपलब्ध कराके समाज के कारामद मेम्बर बनाने की ओर ध्यान देना चाहिये। उन्होंने कहा कि इस सिलसिले में नशे के

आदी लोगों के समाजी और आर्थिक रूप से हम आहंगी पैदा कराने के लिये योग्यता हुनर और पेशावराना प्रशिक्षण का महत्व पर ज़ोर देना चाहिये। उन्होनें कहा कि देश में नशे की आदत बढ़ रही है और इसके कारण सयुंक्त पारिवारिक जीवन के हमारे ख़ुद नज़्म व ज़ब्त जैसे समाजी क़रार तबाह हो रहे हैं।

नशा खोरी की बुराई पर क़ाबू पाने के लिये न केवल ऐसी चीज़ों की प्राप्ति कम की जाये बल्कि उन समाजी हालात से निपटा जाये जो उनकी मांग में बढ़ोत्तरी के समाजी हालात पैदा करते हैं। उन्होनें और कहा कि हमारे क़ानून बनाने वाले शराब और नशे के ख़तरो से बाख़बर थे और इसीलिये उन्होंने रहनुमा उसूलों में ये साफ़ किया कि राज्यों को उन पर पाबन्दी लगाने की ओर काम करना चाहिये। सरकारी बयान में कहा गया कि काफ़ी समय से पूरी दुनिया में नौजवानों में नशे का प्रयोग बढ़ रहा है और भारत भी इससे अछूता नहीं है इत्यादि। भारत के सदर और उन जैसे दूसरे शासनीय ज़िम्मेदारों के भाषणों से एहसास होता है कि वो देश में नेशे की रोकथाम में गंभीर है इसके बावजूद ये सच है कि ज़िम्मेदार लोग और उनके परिवार वाले इसके इस्तेमाल से बचे हुए नहीं है। फिर ये कैसे यक़ीन किया जाये कि वो शराब व दूसरे नशे के ख़ात्में के लिये प्रयासरत हैं।

नशा के ख़िलाफ़ ये जो दिन मनाये जाते हैं उसमें इस बात की भी चर्चा की जाती है कि नशे के इस्तेमाल से सेहत की ख़राबी की समस्या बड़े पैमाने पर होती है। बताया जाता है कि हाज़मा प्रभवित होता है, जिगर की बीमारियां पैदा होती हैं, ब्लड प्रेशर और लो ब्लड प्रेशर जैसी समस्यांए पैदा होती है और दिल प्रभावित होता है हड्डियां कमज़ोर होती हैं, कैसंर पैदा होने की संभावनांए बढ़ जाती हैं एनीमिया होता है, याददाश्त कमज़ोर होती है, ख़ुद पर कन्ट्रोल रखने यहां तक कि चलने –फिरने में भी मुश्किल होतीहै। नींद प्रभावित होती है। और प्रभावित लोग बड़े पैमाने पर डिप्रेशन का शिकार होते है। समाजी समस्याओं में परिवार प्रभावित हो रहे हैं। रिश्तों में न इत्तेफ़ाकियां बढ़ रही है,। औरतों पर ज़ुल्म व ज़्यादितयों में बढ़ोत्तरी होती है। बच्चों का शोषण किया जाता है। सामाजी समस्यांए होती है। सड़क हादसों में बढ़ोत्तरी होती है। कानून तोड़ने की घटनाओं में बढ़ोत्तरी होती है। नशा खोरी की लत में लगे लोग चोरी व डकैती की घटनाओं मे भी शामिल होते हैं। सही व ग़लत और जायज़ व नाजायज़ की तमीज़ उन लोगों में समाप्त हो जाती है। नशे के प्रयोग से न केवल सेहत की समस्यांए बल्कि ख़ानदानी, समाजी और आर्थिक समस्याओं के अलावा प्रभावित लोगों में बोलने, सोचेनने व समझने और क्रिया व प्रतिक्रिया जैसीयोग्यतांए भी कमज़ोर पड़ जाती हैं। एल्कोहल या नशा लोगों को उन की परेशानियों और आज़्माइशों और समस्याओं को भुलाने का ज़रिया बनते हैं। यानि ये लोग देश व समाज में लाशउरी में पड़े ज़िन्दा लाशें की भीड़ की शक्ल में बोझ साबित होते हैं। वहीं एक दूसरे के अनुसार हिन्दुस्तान में इस समय 77 प्रतिशत नशा करने वालों की उम्र 11 से 18 साल है और ज़्यादातर नौजवानों की नशे की लत कालिज और हास्टल की आज़ाद ज़िन्दगी से ही लग जाती है। देश के पंजाब राज्य के चार ज़िले अमृतसर, जालन्धर, पटियाला और भटिन्डा में किये गये सर्वे की रोशनी में 78.5 प्रतिशत नशा करने की आदत सोलह साल में ही पड़ जाती है। प्रभावित नौजवान और बड़ी उम्र के मर्द और औरत जो इस तहाबी में पड़े हैं वो किन किन ख़तरों में पड़े है इसका केवलूव के हालिया के ट्रेंड्स से अन्दाज़ा लगाया जा सकता है। जिसके अनुसार अगर तम्बाकू खाने पर पकड़ नहीं की गयी तो आज भी 250 मिलियन बच्चे हलाकत का शिकार हो जायेंगे।

दूसरी समस्याओं की तरह दुनिया में आज नशे का बढ़ावा और प्रयोग भी एक बडी समस्या है। हक़ीक़त ये है कि 19वीं सदी के ख़ात्में और 20वीं सदी के आरम्भ में स्मग्लरों ने नशावर चीज़ों पर ध्यान दिया। मार्फ़ीन, कोकीन, ईथर और हीरोइन के इस्तेमाल के नतीजे में मौतें हुई तो शासन इस अहम समाजी ख़तरे का सर कुचलने पर मजबूर हुई पहले राष्ट्रीय स्तर पर फिर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इसकी रोकथाम के लिये कानून बनाये गये और कई संस्थाएं वजूद में आयीं ताकि नशा खोरी और इसके सरबाब का मुक़ाबला किया जाये एक अन्तराष्ट्रीय संस्था बराए इन्सदाद अफ़यून व दीगर मुज़रादुयात बनायी गयी। जो बाद में संयुक्त राष्ट्र संघ के अन्तराष्ट्रीय नशा मुक्ति

संस्था में तब्दील हो गयी। इसी संबंध से शासन भी फिल वक़्त 361 वाल्न्टरी आर्गनाइज़ेशन चला रही है। जो 367 De - Addiction - cum - Rehabilitation Centre क़ायम किये हुए हैं। और देश के विभिन्न क्षेत्रों में 68 काउन्सिलिंग और आगाही केन्द्र सरगर्म हैं। और सौ डि–एडिक्शन सेन्टर सेवाएं उप्लब्ध करा रहे हैं।

शासन की सतहों की कोशिशों के अलावा ला महदूद ग़ैर हुकूमती संस्थाए व एनजीओंस भी नशामुक्ति के काम में लगे हुए हैं। तो फिर क्यों इन सभी प्रयासों के बावजूद न समस्या में कमी आती है न नशे के प्रयोग पर क़ाबू पाया जाता है न पारिवारिक समस्यांए जो इसके कारण पैदा होती हैं,इनमें कमी आती है। न सामजी व आर्थिक समस्यांए हल होती हैं और न ही इस क़दर बड़े पैमाने पर माल व दौलत व वक़त व योग्यताओं और साधनों के बढ़ावे व प्रयोग से समस्या का हल निकलता है? मालूम हुआ कि समस्या से निपटने में जो फ़िक्र है वही नाक़िस है यही कारण है कि नाक़िस सोच व नज़र की बिना पर आज तरीके तालीमे में जिस मासूम बचपन और नौजवान नस्ल को सींचा और परवान चढ़ाया जाता है वो मसले के हल में और रूकावट बनता है। फिर वो नाक़िस तर्ज़ हुकूमत भी मसले का भरपूर हल नहीं रखती हैजिसकी रोशनी में रोशन ख़्याल जमहूरियत के ध्वजवाहक क़ूवत व इक़्तिदार का खेल खेल रहे हैं। अगर ये तनक़ीद बराये इस्लाह नही होते तो फिर क्या वहज थी कि अल्लाह और उसके रसूल स0अ0 की एक हिदायत पर मदीने की गलियां शराब नोशों को मजबूर कर देतीं कि उनके मुंह से लगे शराब के गिलास चकनाचूर कर दिये जायें। मामला साफ़ व दढ़ अक़ीदा, फ़िक व नज़रिया और हुकूमत के तर्ज़ में बदलाव का है जिसकी तलश में आजा मानवता दर दर भटक रही है। लेकिन महसूस होता है कि अल्लाह तआला की बड़ाई का इज़हार करने वाले लाशउरी से दो चार होने की बिना पन ही नही जानते कि जिस धर्म के वो पैरोकार हैं वो न केवल हर मसले का हल रखता है बल्कि एक मुकम्मल ज़ाब्ता हयात भी पेश करता है। लाशउरी की बिना पर वह हर ओर ज़लील व ख़ार है और उनकी मिसला उस गधे की है जिसकी पीठ पर किताबो का बोझ तो लदा हो तो लेकिन वो जानता ही न हो कि उसमें क्या लिखा है।

शेष : हैज़ के कुछ एहकाम

हैज़ की हालत में दीनी किताबों का पढ़ना और दर्स देना: नापाकी के दिनों में दीनी किताबों का पढ़ना, अध्ययन करना और दर्स देना जायज़ है लेकिन उनमें जहां क़ुरआन करीम की आयत लिखी हुई हो उस जगह हाथ लगाना या वो आयत ज़बान से पढ़ना जायज़ नहीं। (शामी:1/130)

जब नमाज़ पढ़न के दौरान हैज़ आ जाये: अगर फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ने के दौरान हैज़ आ गया तो वो नमाज़ बिल्कुल माफ़ हो जायेगी, लेकिन अगर नफ़िल पढ़ने के दौरान हैज़ आ गया तो बाद में उसकी क़ज़ा करना ज़रूरी है। (शामी:1/213)

और अगर किसी नमाज़ के आख़िरी वक़्त में हैज़ आ गया और उसने अभी तक नमाज़ नहीं पढ़ी थी, तब भी ये नमाज़ माफ़ हो जायेगी, बाद में इसकी क़ज़ा नहीं है। (ऐज़न)

इन्तिक़ाए दम के बाद के कुछ एहकाम:

1– अगर दस दिन हैज़ आने के बाद किसी नमाज़ के आख़िरी वक़्त में ख़ून बन्द हुआ, लेकिन अभी इतना वक़्त बाकी है कि "अल्लाहु अकबर" यानि तकबीरे तहरीमा कह सकती थी तो उस पर नमाज़ की क़ज़ा लाज़िम होगी।

2– अगर दस दिन से कम हैज़ किसी नमाज़ के वक़्त बन्द हो गया और अभी इतना वक़्त बाकी है कि गुस्ल करके तकबीर कही जा सकती है तो ये नमाज़ उस पर फ़र्ज़ होती है।

3– अगर किसी की आदत पांच दिन ख़ून आने की है और चार दिन ख़ून आकर बन्द हो गया यानि उसकी हमेशा की जो आदत है उससे पहले बन्द हो गया तो उस पर एहतियाती तौर पर ये ज़रूरी है कि गुस्ल करे और नमाज़ शुरू कर दे। लेकिन जब तक आदत के दिन पूरे न हो जाएं सम्भोग करना जायज़ नहीं होगा। (शामी:1/215–218)

4– अगर दस दिन पूरे होने के बाद रमज़ानुल मुबारक की रातके आख़िरी हिस्से में पाक हुई, सुबह सादिक़ होने में सिर्फ़ अल्लाहुअकबर कहने का वक़्त बचा था, तो उस दिन का रोज़ा रखना मोतबर होगा। और अगर दस दिन से कम में ख़ून बन्द हुआ है तो अगर सुबह सादिक़ में इतना वक़्त बाक़ी हो कि गुस्ल करके तकबीरे तहरीमा कह सकती है तो उस दिन का रोज़ा रखना मोतबर होगा वरना उससे कम बाक़ी हो तो वो उस दिन का रोज़ा नहीं रख सकती। (शामी:1/217, किताबुल मसाएल: 1/208)

अल्लाह उनसे राज़ी वे अल्लाह से राज़ी

ख़लील हसनी नदवी

सहाबा किराम हुज़ूर स0अ0 से तरबियत पायी हुई वह जमाअत है जिसने दुनिया ही में जन्नत की बशारत, अल्लाह की ख़ुशनूदी और रज़ामन्दी हासिल कर ली थी। इन मुबारक लोगों का तज़किरा कुरआन करीम में जगह–जगह मिलता है, कहीं उनके बारे में आता है:

(अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वे अल्लाह से राज़ी हुए) (सूरह माइदा: 119)

कहीं उनका तज़किरा इन शब्दों में आता है:

(और जो लोग अल्लाह और रसूल की पैरवी करेंगे तो वे उन लोगों के साथ होंगे जिन पर अल्लाह ने ईनाम फ़रमाया, यानि अम्बिया, सिद्दीक़ीन, शोहदा और नेकोकार और ये क्या ही ख़ूब साथी हैं) (सूरह निसा: 69)

कहीं उनका ज़िक्र इस तरह आता है:

(जो ईमान लाये और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह के रास्ते में अपने मालों और जानों से जिहाद किया, वे अल्लाह के यहां सबसे ऊंचा मक़ाम रखते हैं, और वही लोग कामयाब हैं) (सूरह तौबा: 20–22)

कहीं उनका तज़किरा अल्लाह के महबूब रसूलुल्लाह स0अ0 के साथ किया जाता है:

(फिर अल्लाह तआला ने सकीनत अपने रसूल और मुसलमानों पर उतारी) (सूरह तौबा: 26)

(मुहम्मद स0अ0 अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं वे इनकारियों पर ज़ोरावर हैं, आपस में मेहरबान हैं, आप उन्हें रूकुअ और सजदा करते देखेंगे, अल्लाह का फ़ज़ल और ख़ुशनूदी चाहते हैं, उनकी अलामतें सजदों के असर से उनके चेहरों पर नुमायां हैं) (सूरह फ़तेह: 29)

ये वह जमाअत है जिसको नबी करीम स0अ0 का साथ मिला और इस साथ से उसने भरपूर फ़ायदा भी उठाया। जिसने अपना तन, मन, धन सब अल्लाह की रज़ा को पाने के लिये, उसके रसूल की मुहब्बत की ख़ातिर और उसके दीन की मदद के लिये लुटा दिया था, ये वह जमाअत है जिसकी तवज्जो का केन्द्र और मुहब्बत का आधार केवल आप स0अ0 की ज़ात थी। उनकी ज़िन्दगियां आप स0अ0 की शिक्षाओं की ख़ूबसूरत परछाइयां थीं। यही वो ख़ूबियां थीं जिसने उनको आसमान का चमकता हुआ सितारा बना दिया था जिससे उनके बाद के लोग रोशनी तो हासिल करते हैं मगर उस तक रसाई पाना उनके लिये मुमकिन नहीं। आप स0अ0 के साथ ने उनको ईमान की उस लज़्ज़त से भर दिया था जो लज़्ज़त हज़ारों बरस की रियाज़त के बाद भी हासिल नहीं हो पाती। वो लज़्ज़त उनके कुछ मिनटों के साथ और साथ के नतीजे में मुहब्बत से हासिल हो गयी थी। यही वो लज़्ज़त आशनाइ थी जिसने साहरान मूसा को ऐसा ईमान नसीब कर दिया था कि उन्होंने फ़िरऔन की धमकी के जवाब में कहा कि:

(आपको जो फ़ैसला करना हो कीजिए) (ताहा: 72) आपका फ़ैसला तो इस दुनिया ही की ज़िन्दगी तक है, हम अपने रब पर ईमान ला चुके ताकि वो हमारी ख़ताओं को और आपने जिस जादू पर हमें मजबूर किया उसको माफ़ कर दे और अल्लाह ही बेहतर है और बाक़ी रहने वाला है।

सहाबा किराम जिस चीज़ में सबसे ज़्यादा नुमाया और श्रेष्ठ थे वो उनका फ़िदा होना और रसूलुल्लाह स0अ0 से उनकी मुहब्बत व अक़ीदत थी। यही वहज थी कि जांनिसारी के वो हैरान करने वाले वाक़्यात उससे सादिर हुए कि अगर लगातार वो वाक़्यात सीरत और तारीख़ की किताबों में महफ़ूज़ न होते तो इन्सान की अक़्ल इसको मानने से इनकार कर दीत। उनकी जांनिसारी को उनके सख़्त दुशमनों और ख़ून के प्यासों ने भी माना है। सुलह हुदैबिया के मौक़े पर अम्र बिन मसूद सक़फ़ी जिनको कुरैश ने अपना कासिद बनाकर आप स0अ0 के पास भेजा था उन्होंने आप स0अ0 के साथ सहाबा कि हैरतअन्गोज़ अक़ीदत का जो मंजर देखा उसने उनके दिल पर अजब असर किया कुरैरश से जाकर कहा मैंने क़ैसर व किसरा व नजाशी के दरबार देखे हैं लेकिन ये अक़ीदत वाबस्तगी कहीं नहीं देखी। मुहम्मद स0अ0 बात करते हैं तो सन्नाटा छा जाता है। कोई शख़्स उनकी तरफ़ नज़र भरकर देख नहीं सकता। वो वज़ू करते हैं तो जो पानी गिरता है उस पर लोग टूट पड़ते हैं। लुआबे दहन (थूक) अक़ीदत के साथ हाथोंहाथ लेते हैं और चेहरे और जिस्म पर मल लेते हैं।

अब आइये चन्द नमूने पेश करते हैं सहाबा किराम की

मुहब्बत व जांनिसारी के।

हज़रत ख़बीब रज़ि0 जब काफ़िरों की क़ैद में थे और सूली का फन्दा उनके लिये तैयार किया जा चुका था उस वक़्त एक सख़्त दिल ने उनके जिगर को छेदा और पूछा, कहो क्या तुम ये पसंद करोगे कि मुहम्मद स0अ0 फ़ंस जायें और मैं छूट जाऊं। आशिक़े रसूल ने निहायत जोश से जवाब दिया, ख़ुदा जानता है कि मैं तो ये भी बर्दाश्त नहीं कर पाऊंगा कि मेरी जान बचे और नबी करीम स0अ0 के पांव में मामूली सा कांटा भी चुभे।

हज़रत जैद बिन अलदिस्ना रज़ि0 को क़त्ल के लिये हरम से बाहर लाया गया। उस वक़्त कुरैश के बहुत से लोग वहां जमा थे। अबू सुफ़ियान भी वहां मौजूद थे। उन्होंने हज़रत ज़ैद रज़ि0 से कहा, ज़ैद क़सम देकर तुमसे पूछता हूं क्या तुम ये पसंद करोगे कि तुम आराम से अपने घर में घरवालों के साथ हो और तुम्हारी जगह मुहम्मद स0अ0 हों? उन्होंने तड़प कर जवाब दिया कि मुझे तो ये भी गवारा नहीं कि मैं अपने घर में आरा मसे हूं ओर मुहम्मद स0अ0 को एक कांटा भी चुभे। अबूसुफ़ियान रज़ि0 ने उस पर कहा मैंने किसी को किसी से इतनी मुहब्बत करते नहीं देखा जितनी मुहब्बत मुहम्मद स0अ0 के साथी मुहम्मद स0अ0 से करते हैं।

उहद की जंग में हज़रत अबूदजाना रज़ि0 ने अपनी पीठ को आप स0अ0 पर झुका कर ढाल बना दिया था तीर उनकी पीठ पर लग रहे थे और वे बेहिस व हरकत खड़े थे। इस मौक़े पर ज़ोर शोर का हमला काफ़िरों की ओर से हुआ। आप स0अ0 ने फ़रमाया कौन उनको पीछे ढ़केलता है, और जन्नत लेता है, सात अन्सारी खड़े थे। एक एक आदमी बारी बारी बढ़ता रहा और आप स0अ0 यही फ़रमाते रहे। सातों उसी जगह काम आ गये। हज़रत तलहा रज़ि0 ने अपने हाथ से सिपर का काम लिया और हुज़ूर स0अ0 की जानिब आने वाले तीर अपने हाथ पर रोके ये हाथ हमेशा के लिये शल हो गया था। हज़रत अबू तलहा रज़ि0 जो मशहूर तीरंदाज़ थे उन्होंने सिपर आप स0अ0 के चेहरे पर ओट कर लिया था कि आप स0अ0 पर कोई वार न आने पाये। आप स0अ0 कभी गर्दन उठाकर दुश्मनों की फ़ौज की तरफ़ देखते तो ये अर्ज़ करते कि आप गर्दन न उठाइये ऐसा न हो कि कोई तीर आकर लग जाये। ये मेरा सीना सामने है। इस मौक़े पर एक बार फिर काफ़िरों की तरफ़ से भीड़ हुई तो हुज़ूर स0अ0 ने फ़रमाया, कौन मुझ पर जान देता है, ज़ियाद बिन सकन रज़ि0 पांच अन्सारी लेकर इस ख़िदमत को अदा करने के लिये बढ़े और एक एक ने जांबाज़ी से लड़कर अपनी जानें फ़िदा कर दीं। जियाद रज़ि0 को ये शर्फ़ हासिल हुआ कि हुज़ूर स0अ0 ने हुक्म दिया कि उनकी लाश क़रीब लाओ, लोग उठा लाये, कुछ–कुछ जान बाक़ी थी, क़दमों पर सर रख दिया, और उसी हालत में जान दी।

एक औरत जिनके बाप, भाई और शौहर इस जंग में शहीद हो गये थे, लेकिन उन्होंने इनमें से किसी के बारे में इनमें से किसी से न पूछा, लेकिन हुज़ूर स0अ0 के बारे में हर एक से पूछती रहीं कि आप कैसे हैं? सबकी तरफ़ से यही जवाब मिलाः आप स0अ0 ख़ैरियत से हैं। लेकिन उन ख़ातून ने कहा कि जब तक अपनी आंखों से आप स0अ0 को न देख लूंगी, मुझे चैन नहीं आयेगा। उनकी बेक़रारी देखकर उनको आप स0अ0 के पास लाया गया, जब उन्होंने अपनी आंखों से आप स0अ0 को देखा तो वो ऐतिहासिक जुम्ला कहा जिसको इतिहास आज तक न भुला सका है और न कभी भुला सकेगी। उन्होंने कहाः "आप स0अ0 के बाद हर मुसीबत हल्की है ऐ अल्लाह के रसूल स0अ0"

दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर बिन अलख़त्ताब रज़ि0 ने हुज़ूर अकरम स0अ0 से कहाः "ऐ अल्लाह के रसूल स0अ0 आप स0अ0 हमको हर चीज़ से ज़्यादा प्यारे हैं, सिवाए अपनी ज़ात के, तो नबी करीम स0अ0 ने कहाः नहीं! जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, उस वक़्त तक तुम्हारा ईमान विश्वस्नीय नहीं हो सकता, जब तक कि मैं तुमको तुम्हारी जान से ज़्यादा प्यारा न हो जाऊं। हज़रत उमर रज़ि0 ने कहाः बस! ख़ुदा की क़सम, मुझको आप स0अ0 अपनी ज़ात से भी ज़्यादा प्यारे हैं, नबी करीम स0अ0 ने फ़रमायाः अब ठीक है ऐ उमर।"

हज़रत अली रज़ि0 से पूछा गया कि रसूलुल्लाह स0अ0 से आप की मुहब्बत कैसी थी?हज़रत अली रज़ि0 ने कहाः ख़ुदा की क़सम! आप स0अ0 हमको हमारे माल व दौलत, माँ–बाप, बीवी–बच्चों से ज़्यादा प्यारे थे।

ये कुछ वाक़्ये हैं, वरना इस जमाअत का तो हर व्यक्ति जब नबी स0अ0 में इस बुलन्दी पर ख़ड़ा नज़र आता है जहां तक केवल सहाबा किराम की ही ख़ासियत है।

भलाई की भावना

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

(हज़रत मअक़िल बिन यसार रज़ि0 फ़रमाते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल स0अ0 को इरशाद फ़रमाते हुए सुनाः अल्लाह तआला जिस बन्दे को किसी क़ौम का ज़िम्मेदार बनाता है, लेकिन वह उस क़ौम के साथ भलाई का मामला नहीं करता है, तो ऐसा शख़्स जन्नत की खुशबू भी नहीं पा सकेगा) (बुख़ारी)

फ़ायदाः उप्रोक्त हदीस से मालूम हुआ कि अगर कोई व्यक्ति किसी क़ौम का ज़िम्मेदार चुना जाये, लेकिन वो उनके साथ भलाई का मामला न करे, तो ऐसा व्यक्ति क़यामत के दिन जन्नत की खुशबू से भी वंचित रहेगा। इसीलिये आप स0अ0 ने ऐसे शासक से अल्लाह की पनाह मांगी है जो अपनी प्रजा के साथ न्याय का मामला न करता हो, आप स0अ0 ने फ़रमायाः (ऐ अल्लाह! तू हम पर हमारे गुनाहों की वजह से ऐसे व्यक्ति को हाकिम न बनाना जिसके अन्दर न तेरा डर हो और न ही हमारे साथ रहम का भाव हो) यद्यपि अगर कोई ऐसा हाकिम हो जो लोगों के साथ न्याय का मामला करता हो, लोगों के साथ हर मामले में भलाई से पेश आता हो, तो ऐसे व्यक्ति के बारे में आप स0अ0 ने फ़रमायाः जब क़यामत के दिन अल्लाह के अर्श के साये के अलावा कोई साया नहीं होगा, उस दिन सात तरह के लोग अल्लाह के अर्श के साये में होंगे, उन्हीं में से एक इन्साफ़ करने वाला ईमानवाला हाकिम भी होगा।

मालूम हुआ कि हर ज़िम्मेदार इन्सान अपने अधीन लोगों के साथ भलाई का मामला करना चाहिये और यूं भी दीन–ए–इस्लाम में हर व्यक्ति के साथ भलाई याचित है। यही वजह है कि कुरआन मजीद में नबी के तज़किरे के साथ उनका शुभचिन्तक होना भी बताया गया है, ताकि इसके महत्व को समझा जा सके। इसीलिये आप स0अ0 ने इरशाद फ़रमायाः (दीन सम्पूर्ण नसीहत है) जिससे बात साफ़ हो जाती है कि हर इन्सान को दूसरे इन्सान के साथ अच्छाई और भलाई का बर्ताव करना चाहिये। भलाई का अर्थ ये है कि इन्सान अल्लाह के बताए हुए हुक्मों को पूरा करे, अल्लाह के रसूल स0अ0 के बताए हुए तरीक़ों पर चलने वाला हो, लोगों के साथ अच्छे से पेश आता हो, अगर वो शासक है तो अपनी प्रजा के साथ हमदर्दी व नर्मी का मामला करता हो, किसी पर ज़ुल्म न करता हो, लोगों की ज़रूरतों को पूरा करता हो, ग़म के मौक़े पर लोगों का साथ देता हो, इसी प्रकार अगर कोई भी व्यक्ति शासन का प्रतिनिधि हो, तो उसकी भलाई ये है कि वो संसद में ऐसे उपाय रखने का प्रयास करता हो जिनसे लोगों की भलाई जुड़ी हुई हो, इसी तरह अगर कोई व्यक्ति औलाद वाला है तो उसकी भलाई ये है कि वह अपने बच्चों को ऐसी शिक्षा दे जो उसके बच्चों को दुनिया में भी फ़ायदा दे और आख़िरत की नेकी का भी ज़रिया बने और खुद उसके इन्तिक़ाल के बाद उसका यही काम उसके लिये भी अज्र व सवाब का कारण बन सके। इसी प्रकार अगर कोई व्यक्ति डॉक्टर है, तो उसकी भलाई ये है कि वह आने वाले मरीज़ का इलाज मख़लूक़ की ख़िदमत की नियत से करे, और इस काम को केवल पैसा कमाने का ज़रिया न बनाए, इसी प्रकार अगर कोई व्यक्ति आलिम है और लोग उसके पास अपने मसले को लेकर आते हैं तो उनके साथ भलाई ये है कि वह उनके मसलों को पूरे इख़लास के साथ हल करे, उनको फ़ायदेमन्द मश्वरे दे, इसी तरह अगर कोई गुमराही के रास्ते पर पड़ा हुआ है, तो उसके साथ भलाई ये है कि उसको सीधा रास्ता दिखाया जाये, मानो ये कि भलाई से मुराद शरीअत के दायरे में रह कर इन्सान का हर उस काम को पूरा करना है जिसके अन्दर दूसरों के लिये भलाई जुड़ी हो।

उप्रोक्त व्याख्या से ये समझा जा सकता है कि किसी भी देश की उन्नति के लिये, समाज में भाईचारे व मुहब्बत के वातावरण को आम करने के लिये हर इन्सान के अन्दर भलाई करने का भाव होना बहुत ज़रूरी है। इसीलिये रसूलुल्लाह स0अ0 ने हर मौक़े पर भलाई की शिक्षा दी है।

रूढ़िवादिता और कट्टरता

सैय्यद मुहम्मद मक्की हसनी नदवी

आजकल इलेक्ट्रानिक मीडिया और प्रिन्ट मीडिया ने जिन शब्दों को सबसे अधिक तोड़–मरोड़ का पेश किया है और अपने अर्थों में इसका प्रयोग किया है उनमें रूढ़िवादिता एवं कट्टरता को भी विशेष महत्व प्राप्त है। इन दोनों शब्दों को आम तौर पर समान अर्थों में प्रयोग किया जाता है जबकि वास्तव में इन दोनों शब्दों के अलग–अलग अर्थों को एक दूसरे में मिलाने की जानबूझ कर कोशिश है या फिर वैचारिक क्षीणता के परिणाम में दोनों शब्दों के अर्थों के अन्तर को न समझ पाने का परिणाम है।

"रूढ़िवादिता" ठोस और आधारभूत नियमों और किसी भी धर्म के विशुद्ध ढ़ांचे को सुरक्षित करने का एक निर्माणी प्रयास है और "कट्टरता" किसी भी प्रकार की धार्मिक भावनाओं और विभिन्न धर्मों के बीच नफ़रत की आग भड़काने का एक अराजक रवैया है। इस क्रम में रूढ़िवादिता' धार्मिक मूल्यों एवं आत्मिकता से भरे वातावरण में गहन आत्मचिन्तन का नाम है, जबकि कट्टरता' धर्म के नाम पर भौतिकता एवं इच्छापूर्ति के प्रयास हैं।

रूढ़िवादिता– इस शब्द की अस्ल से ही साफ़ होता है कि धर्म के आधारभूत मूल्यों को कसरत से अपनाया जाये और किसी भी तरह इसके नियमों से हटना गवारा न किया जाये और उन आधारों को बढ़ावा देने का प्रयास किया जाये, इस क्रम में देखा जाए तो हर धर्म के पैरोकार अपने धर्म पर सख़्ती से पाबन्द हैं। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिये मिशनरी व्यवस्था स्थापित की गयी हैं और उन्हें शासनों की सरपरस्ती भी प्राप्त है। ईसाई समुदाय में उन्हीं लोगों को महत्व प्राप्त है जिनका अपने चर्च से रिश्ता मज़बूत है। इस सिलसिले में जार्ज बुश और बराक ओबामा जैसे अन्तर्राष्ट्रीय व्यवक्तित्वों की धार्मिक रूढ़िवादिता कोई ढ़की–छिपी बात नहीं।

लेकिन मामला जब मुसलमानों का होता है और वे जब अपने दीनी मूल्यों व पहचानों को सख़्ती के साथ अपनाना चाहते हैं तो उन्हें रूढ़िवादी कह कर उन पर ठप्पा लगाने का प्रयास किया जाता है और ये जताया जाता है कि देश व समाज के लिये सबसे ख़तरनाक यही लोग हैं। और फिर रूढ़िवादिता और कट्टरता को बहुत ही नकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता है जिसका परिणाम ये निकलता है कि वे निर्दोष मुसलमान जो बाहर से इस्लामी शिक्षा के अनुरूप होता है वह समाज का सबसे ख़तरनाक इन्सान बन जाता है।

कट्टरता के हवाले से देखा जाये तो जहां भी मुसलमान कमज़ोर हैं, उन्हें उनका धर्म बदलने पर मजबूर किया जाता है और विरोध करने पर उन्हें मौत के घाट उतार दिया जाता है। उसका खुला उदाहरण अफ़्रीक़ा के ग़रीब देश हैं और अब हमारे देश में "घर वापसी" के नाम से नकारात्मक कार्यवाहियां हो रही हैं। इसके अतिरिक्त खुले तौर पर इस्लामी व्यक्तित्वों को निशाना बनाया जाता है, कभी पर्दे को औरतों पर अत्याचार कहा जाता है, कभी दाढ़ी टोपी को कट्टरता की पहचान बताया जाता है, कभी अज़ान तो कभी मस्जिदों को निशाना बनाया जाता है, और इस "कट्टरता" को अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता की संज्ञा दी जाती है। लेकिन जब मुसलमान अपना बचाव करने की कोशिश करता है और इस्लामी शिक्षाओं की वास्तविकताओं को बयान करना चाहता है तो उसे "कट्टरता" कह कर उस पर टिप्पणी की जाती है।

वास्तव में देखा जाए तो रूढ़िवादिता और कट्टरता ये दोनों शब्द पश्चिमी ताक़तों के पैदा किये गये हैं और इसका उद्देश्य केवल इस्लाम और मुसलमानों को बदनाम करना और उसके बढ़ते हुए प्रभाव को रोकना है। लेकिन ये भी एक वास्तविकता है कि इस्लाम को जिस क़दर बदनाम करने की कोशिश की गयी उसकी ओर उतनी ही तेज़ी से लोगों का रूझान बढ़ा है। जिन यूनिवर्सिटीज़ में इस्लाम विरोधी साहित्य तैयार किया जाता है वहीं के छात्र इस्लाम की दावत देने वाले बन कर निकलते हैं। जबकि इस्लाम विरोधी प्रोपगन्डो से पहले इस्लाम को एक आउट आफ़ डेट धर्म की तरह समझा जाता था और उसकी अच्छाइयों को भी बुराइयों में गिना जाता था। पश्चिमी चिन्तकों ने कुछ ग़लत भविष्यवाणी नहीं की है कि आने वाली सदी इस्लाम की सदी होगी।

लोकतन्त्र की पीड़ा

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

पश्चिमी दुनिया एक अक़्ल परस्त दुनिया है, जिसे "धर्म" से कोई सरोकार नहीं है, बल्कि कई एतबार से उसका आधार ही धर्म के विरोध पर स्थापित है। लेकिन इससे भी इनकार नहीं कि जब इन्सान एक वास्तविक धर्म का इनकार करता है तो उसे स्वयं के बनाये हुए दसियों धर्म के सामने सर झुकाना पड़ता है। यूरोप की भी वास्तविकता यही है। धर्म के नाम पर बिदकने वाली इस दुनिया ने अपने लिये बहुत से अक़्ली विचारों को धर्म का स्थान दे रखा है। इन्हीं विचारों में एक विचार "लोकतन्त्र" का भी है। यद्यपि लोकतन्त्र एक ऐतिहासिक व्यवस्था और एक राजनीतिक अनुभव है लेकिन पश्चिम वाले लोकतन्त्र की चर्चा एक आस्था के तौर पर करते हैं। उनके निकट लोकतन्त्र "पवित्र" भी है और व्यवहारिक मूल्यों के समान भी। यही कारण है कि उसने पूरी दुनिया को लोकतन्त्र और अलोकतन्त्र के ख़ाने में बाँट रखा है और जब कोई वर्ग लोकतन्त्र की ख़राबियों का शिकार होता है तो उनकी दृष्टि में उसकी समस्या का हल और अधिक लोकतन्त्र ही है।

पश्चिम में लोकतन्त्र 18वीं सदी में स्थापित हुआ, लेकिन 20वीं सदी में उसे असाधारण सफलता प्राप्त हुई। लोकतन्त्र ने जर्मनी में नाज़ीवाद को पराजित किया, भारत में अपनी जड़े मज़बूत कीं, एशिया और अफ़्रीक़ा में नये गणतन्त्रों ने जन्म लिया, यूनान में लोकतन्त्र को 1974ई0 को सफलता मिली, स्पेन में 1975ई0 में लोकतन्त्र ने अपना पताका फहराया, अर्जेन्टाइना में 1983ई0 में लोकतन्त्र को सफलता मिली, ब्राज़ील में लोकतन्त्र को 1985ई0 में विजय प्राप्त हुई, चिली में 1989ई0 लोकतन्त्र ने खिलाफ़त को पराजित किया। सोवियत यूनियन के ख़ात्मे के बाद बहुत से नये गणतन्त्र अस्तित्व में आये। अतः 2000ई0 तक दुनिया के 120 देशों में लोकतान्त्रिक व्यवस्था को परिचित कराया गया। यानि दुनिया के कुल देशों में से 63 प्रतिशत हिस्से में लोकतन्त्र लागू हो गया।

यूरोप के निकट लोकतन्त्र की विशेषता ये है कि लोकतान्त्रिक देशों में धनी व निर्धन वर्गों में दूरी कम होती है। जिसके कारण धनी व निर्धन के बीच संघर्ष भी कम होता है। लोकतान्त्रिक देश जंग कम लड़ते हैं और भ्रष्टाचार के मुक़ाबले में सफल मज़ाहमत ज़्यादा संभव होती है। और सबसे अहम बात ये है कि लोकतान्त्रिक देशों में जनता को अपने विचारों को प्रकट करने की सम्पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त होती है। और वह अपने और अपने आने वाली नस्ल के भविष्य का निर्माण स्वयं कर सकते हैं। यही कारण है कि करोड़ों लोग लोकतन्त्र को गले लगाने के लिये तैयार हैं और आम तौर पर दुनिया में ज़बरदस्त ख़ैर सगाली पायी जाती है।

लोकतन्त्र के संबंध से ये कहा जाता है कि बीसवीं सदी के अन्त में इसे अत्यधिक सफलता प्राप्त हुई। या यूँ कहिये कि पिछली सभी व्यवस्थाओं के मुक़ाबले लोकतान्त्रि व्यवस्था अधिक स्थायी और अधिक चमत्कारी साबित हुई लेकिन इसे केवल एक "विचार" ही समझा जाना चाहिये क्योंकि वास्तविकता ये है कि दूसरी सभी राजनीतिक व्यवस्थाओं की तरह ये लोकतान्त्रिक व्यवस्था भी पूरी तरह नाकाम हुई। यद्यपि ख़िलाफ़त से लोकतन्त्र तक आने में और फिर लोकतन्त्र की हानियों के प्रकट होने में जो समय लगा निस्बतन थोड़ा लम्बा था। और इसी लम्बे अर्से को लोकतन्त्र की सफलता की संज्ञा दी गयी।

इसमें कोई शक नहीं कि लोकतन्त्र को बीसवीं सदी के आख़िर में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बहुत अधिक सफ़लता मिली फिर भी इक्कीसवीं सदी के आरम्भ में ही इसके नकारात्मक प्रभाव भी प्रकट होने लगे और पश्चिमी दुनिया 2007–08 में ज़बरदस्त आर्थिक संकट का शिकार हुई जिसके परिणाम में लोकतान्त्रिक व्यवस्था को ज़बरदस्त धक्का लगा। और पश्चिम की राजनीति व अर्थव्यवस्था का खोखला पन पूरी तरह से सामने आ गया।

लोकतन्त्र को एक और धक्का अमरीका–इराक़ युद्ध से लगा। जार्ज बुश ने ये दावा किया था कि इराक में रसायनिक हथियार मौजूद है और उसकी मौजूदगी पूरी दुनिया की शांति के लिये ख़तरा है। लेकिन इराक़ की ईंट से ईंट बजाने के बावजूद ऐसे हथियारों का नाम व निशान तक न मिला। इस तबाही को जार्ज बुश ने लोकतन्त्र की बहाली की संज्ञा दी और ख़िलाफ़त से आज़ादी और लोकतन्त्र की मज़बूती को इस जंग के जायज़ होने की बुनियाद बना लिया।

मिस्टर बुश ने अपनी राष्ट्रपति होने के दूसरे चरण में कहा था कि आज़ाद क़ौमों की ओर से लोकतन्त्र के बढ़ावे के लिये की जाने वाली कोशिशें हमारे दुश्मनों की हार का आरम्भबिन्दु है। लेकिन ज़ाहिर है कि केवल स्वार्थ और लोकतन्त्र के नाम पर अमरीकी साम्राज्य को मज़बूत करने की कोशिश, जिसका परिणाम ये निकला की लोकतन्त्र के नाम पर हज़ारों बेगुनाहों को मौत के घाट उतार दिया गया, इज़्ज़तें रौंदी गयीं और पूरा देश गृहयुद्ध की भेंट चढ़ गया।

लोकतन्त्र को तीसरा सबसे ज़बरदस्त धक्का मिस्र की क्रान्ति में लगा। 2011ई0 में हुस्नी मुबारक की तानाशाही के ख़ात्मे के बाद लोकतन्त्र की एक नयी किरण पैदा हुई, लोकतन्त्र की बहाली और उसकी मज़बूती के लिये चुनाव कराये गये, लेकिन इत्तिफ़ाक़ कि चुनाव में किसी धर्मनिरपेक्ष और लिबरल पार्टी के बजाए इस्लाम पसंद पार्टी मुस्लिम ब्रदरहुड को सफलता मिल गयी, पश्चिमी ताक़तों ने धर्मनिरपेक्षता के नाम पर इस्लाम पसंद पार्टी को किसी भी हाल में स्वीकार नहीं किया और लोकतन्त्र का गला घोंट कर सैन्य विद्रोह की राह आसान कर दी। नतीजा ज़ाहिर था, ब्रदरहुड को निषेध घोषित कर दिया गया। इसके समर्थकों को सलाख़ों के पीछे धकेल दिया गया और लोकतान्त्रिक रूप से चुने गये राष्ट्रपति मुहम्मद मुर्सी को क़ैद कर दिया गया।

लोकतन्त्र का विषय जितना आकर्षक और दिलफ़रेब है, उसके दामन में उससे कहीं ज़्यादा छेद हैं। देखने में लोकतन्त्र का अर्थ यही है कि जनता के द्वारा, जनता पर जनता का शासन हो। लेकिन जब चुनाव होते हैं तो मामला उसके बिल्कुल विपरीत होता है। एक अन्दाज़े के अनुसार आम तौर पर साठ प्रतिशच मतदान होता है और वो वोट भी दसियों छोटी–बड़ी पार्टियों में बंट जाता है और जब कोई पार्टी सत्ता में आती है तो उसके खाते में कुल जनता का दस प्रतिशत वोट भी नहीं आता है। यानि नब्बे प्रतिशत का विरोध और दस प्रतिशत का समर्थन पर सत्ता स्थापित हो जाती है। इस पर तरफ़ा ये कि दस प्रतिशत वोट प्राप्त करने वाली पार्टी भी पूंजीवादी कम्पनियों की मरहून मिन्नत होती है।

लोकतन्त्र की असफलता इस बात से भी साफ़ होती है कि अमरीका जैसा लोकतान्त्रिक देश स्वयं "जमहूरी जमूद" का शिकार है। यूं तो अमरीका का दावा दुनिया भर में लोकतान्त्रिक व्यवस्था लागू करना है और उसकी उसने अमली कोशिश भी कीं लेकिन ख़ुद अमरीका में दो जमाअती सियासी निज़ाम काम कर रहा है, और दोनों जमाअतों ने छोटे सेअर्से में अमरीका को दोबारा दिवालिया होने की कगार पर ला दिया है।

मशहूर अंग्रेज़ी मैग्ज़ीन दि इकोनामिस्ट की एक रिपोर्ट के अनुसार उन्नाति प्राप्त लोकतान्त्रिक देशों में लोगों में राजनीतिक जुड़ाव तेज़ी से कम हो रहा है। बिट्रेन में लगभग दो प्रतिशत लोग ही राजनीति से जुड़े हैं जबकि 1950में ये प्रतिशत बीस प्रतिशत तक था। 49 विभिन्न देशों में हुए सर्वे के अनुसार 1980–84 और 2007–13 में वोटिंग प्रतिशत में लगभग दस प्रतिशत कमी आयी है। यूरोपीय देशों में की जाने वाली एक खोज के अनुसार दो राय देने वालों में से एक काके शासन पर विश्वास नहीं होता। 2012 के एक सर्वे के अनुसार 62प्रतिशत राय देने वालों की इस बात परसहमति है कि राजनेता हमेशा झूठ ही बोलते हैं। इस स्थिति का परिणाम ये है कि राजनीतिक पार्टियों का मज़ाक़ उड़ाना और राजनीतिक व्यवस्था के ख़िलाफ़ नकारात्मक अन्दाज़ में विरोध करना एक आम सी बात है।

अस्ल बात स्वीकार की जाये तो लोकतन्त्र की कोई अमली या व्यवहारिक आधार नहीं। बल्कि दूसरे अनुभवों की तरह वह भी एक अनुभव है जिसके परिणाम में पश्चिम के लोकतान्त्रिक देश राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में बुरी तरह असफल हो चुके हैं। पश्चिम ने हमेशा कोई न कोई नया अनुभव किया और हमेशा उसे मुंह की खानी पड़ी।

राजनीति व अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में पश्चिम ने जितने अनुभव किये वो सब एक नासूर की हैसियत से इतिहास में सुरक्षित हैं। इतिहास के उन्हीं अनुभवों में से एक अनुभव इस्लामी राजनीति व अर्थव्यवस्था भी है जिसका कार्यक्षेत्र अरब की धरती रहा है। ये अनुभव मानव इतिहास में सबसे सफल अनुभव रहा है और आज भी जानबूझ कर या अनजाने में उसी से फ़ायदा उठाया जा रहा है।

काश बहुत से अनुभवों के बाद एक अनुभव इस्लामी व्यवस्था का भी होता, और पश्चिम पक्षपात से बाहर निकल कर एक बार उस व्यवस्था को भी अपनाकर देखते तो यक़ीनन उनकी बहुत सी क्षमतांए नष्ट होने से बच जातीं और वे एक सफल जीवन व्यवस्था से परिचित होते।

तौफ़ीक़-ए-इलाही

अबुल अब्बास ख़ाँ

उन्दुलिस की सरज़मीन का एक मुक़द्दस व बाबरकत काफ़िला, जिसके रूहे रवाँ अब्दुर्रहमान उन्दुलुसी रह0, जिनके दम से सैंकड़ों ख़ानकाहें आबाद, हज़ारों मुरीद, जिनके जुलू में रहबरे सुलूक व मारिफ़त हज़रत जुनैद बग़दादी, जिनके दामन में शेख़े तरीक़त हज़रत शिबली रह0, जिनका रकाब थामे सैकड़ो उलमा व मशाएख़।

ये मुबारक काफ़िला तेज़ी से मंज़िल की तरफ़ रवाँ था। रास्ते में नमाज़ का वक़्त आ पहुंचा, क़रीब ही ईसाईयों की एक बस्ती नज़र आयी, काफ़िला बस्ती में दाख़िल हुआ लेकिन कहीं पानी न मिल सका, काफ़िला एक कुवें पर पहुंचा कुछ लड़कियां पानी भर रहीं थी, सबने वुज़ू किया और अपनी नमाज़ अदा की।

उन्हीं लड़कियों में एक लड़की कुछ चंचल और कुछ शोख थी। शेख की निगाह उस पर पड़ी और उसकी तस्वीर दिल में उतर गयी, कुछ इशारे हुए, कुछ बातचीत हुई, बात से बात बढ़ी और बात बहुत दूर तक जा पहुंची, शेख़ की हालत बदल गयी, धड़कनें तेज़ हो गयीं, चेहरे का रंग उड़ गया, दिल व दिमाग़ का रिश्ता टूट गया, हज़ारों दिलों पर राज करने वाला बेबस व लाचार हो गया।

तीन दिन गुज़र गये, काफ़िला कूच के लिये फ़िक्रमन्द था, लेकिन शेख पूरी दुनिया से ग़ाफ़िल, न वाज़ व इरशाद की मजलिस, न खाने पीने की फ़िक्र, न साथियों में कोई दिलचस्पी, शार्गिदों की परेशानी बढ़ती गयी, मुरीद हैरान की इलाही माजरा क्या है?हज़रत शिबली ने कुछ हिम्मत जुटाई, शेख़ की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि हज़ारों मुरीदीन आप की इस हालत से परेशान हैं, बात कुछ समझ में नहीं आ रही, आप ही कुछ इरशाद फ़रमायें। शेख़ ने गर्दन उठायी, सारे मुरीदीन पर एक नज़र डाली और कहा भाइयों! कब तक तुमसे अपनी हालत छिपाऊं, सच्ची बात तो ये है कि परसों जिस लड़की को कुवें पर देखा था, उसकी मुहब्बत मुझ पर छा चुकी है, मेरा जिस्म व जान अब उसका असीर हो चुका है, अब किसी तरह मुमकिन नहीं कि मैं इस सरजमीन को छोड़कर कहीं और जाऊं, तुम लोग अपने रास्ते जाओ, मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो, तक़दीरे ख़ुदावन्दी नाफ़िज़ हो चुकी है, मुझसे विलायत का लिबास ले लिया गया है, हिदायत की अलामतें उठा ली गयीं हैं, ये कहते हुए शेख दहाड़े मार कर रोने लगे, शिबली हैरत व ताज्जुब में बिलक पड़े, शार्गिदों की चीख़ें निकल गयीं, मुरीद तड़प उठे, कितनी रूहें परवाज़ कर गयीं, कितनी धड़कने थम गयीं, कितने होश खो बैठे, एक भूचाल सा आ गया, पूरे क़ाफ़िले में कोहराम मच गया, उस ज़मीन पर इतने आंसू बहे कि पूरी ज़मीन तर हो गयी।

क़ाफ़िले ने शेख़ को अलविदा कहा और अपने वतन को वापिस लौटा, लेकिन न अब ख़ानकाहें आबाद हैं, न मदरसे क़ायम है, न ज़िक्र की महफ़िलें हैं, न ज़रबों की आहें हैं, बस शेख़ की फ़ुरक़त और उनकी जुदाई का ग़म है, उनकी बातें हैं, उनके तज़किरे हैं, उनकी यादे हैं, और गिड़गिड़ा गिड़गिड़ा कर अल्लाह तआला से एक ही फ़रियाद है कि ऐ दिलों के बदलने वाले हमारे शेख को हिदायत दे, उन्हें वापिस लौटा दे,

हज़रत शिबली कहते है कि शेख की फ़ुरकत में एक साल गुज़र गये । हम मुरीदों ने चाहा कि शेख की कुछ ख़बर मालूम करें, और उसकी बस्ती में जा पहुंचे, लोगों से मुलाक़ाते हुईं, शेख के बारे में पूछा तो किसी ने कहा कि वो फ़लां जंगल में सुअर चरा रहे हैं। ये सुनते ही हमारे पैरों तले से ज़मीन खिसक गयी। शिद्दते ग़म से कलेजा फटने लगा। आंखों से आंसूओं का तूफ़ान उमड़ने लगा। किसी तरह हमने ख़ुद को संभाल और सूरतेहाल मालूम किया तो पता चला कि शेख ने वहां के सरदार की लड़की से मंगनी कर ली है इस शर्त के साथ कि वो उनके सुअर चराया करेंगे, बस ये सुनते ही हम दीवानावार उस जंगल की तरफ़ भागे, जंगल पहुंच कर हमने देखा कि हज़रत शेख सुअर चरा रहे हैं, सर पर नसारा की टोपी है और कमर में ज़न्नार बंधा हुआ है और शेख अपने असा पर टेक दिये हुए हैं ये वही असा था जिसके सहारे शेख़ ख़ुत्बा दिया करते थे और वाज़ व इरशाद में इसी पर टेक दिया करते थे। शेख ने हमें आते हुए देखा तो अपनी गर्दन नीचे झुका ली। हमने सलाम किया तो उन्होंने दबे शब्दो मे जवाब दिया और ख़ामोश हो गये।

हज़रत शिबली कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया कि हज़रत आप रमूज़े शरीअत व असरारे तरीक़त के माहिर,

कुरानियात में बेमिसाल, फ़न्ने हदीस में यकता व बेनज़ीर, आपके दम से एक दुनिया आबाद है, फिर आपकी ये हालत क्योंकर हो गयी?

शेख़ ने कुछ देर ख़ामोशी अपनायी और फिर बड़े दर्द व कर्ब मे फ़रमाया, "मेरे भाइयों, मैं अपने अख़्तियार में नही, सब मेरे रब की मर्ज़ी और उसका फ़ैसला है। उसने जब चाहा मुझे अपने से क़रीब किया और जब उसकी मर्ज़ी हुई उसने मुझे अपनी रहमतों से दूर कर दिया उसके फ़ैसले को कौन टाल सकता है! ऐ मेरे अज़ीज़ो! अपने परवरदिगार के क़हर व ग़ज़ब से डरो, अपने इल्म व कमाल पर कभी गुरूर न करना।" उसके बाद शेख ने आसमान की तरफ़ नज़र उठाकर कहा, ऐ मेरे मौला! मुझे ये गुमान भी न था कि तू मुझे ज़लील व ख़्वार करके अपने दरवाज़े से दूर निकाल देगा।

ये बातें कह कर शेख़ ज़ारोक़तार रोने लगे और शिबली से कहा कि ऐ मेरे अज़ीज! ख़ुदाए बेनियाज़ से डरते रहो, कभी अपने इल्म व फ़ज़ल पर गुरूर न करना, दूसरों को देखकर इबरत हासिल करो, और फिर आसूंओं की झड़ी लग गयी।

शेख की पुरदर्द कैफ़ियत देखकर शिबली और दूसरे मुरीद भी फूट फूट कर रो पड़े, उनके रोने की आवाज़ में बहुत दर्द था, पूरा माहौल हिचकियों में तब्दील हो गया, सबने अल्लाह के सामने गिड़गिड़ा कर दुआ की कि ऐ हमारे परवरदिगार हम तो बस तेरी ही मदद चाहते हैं, सारे काम तेरे बनाने से ही बनेंगे, हमसे ये मुसीबत दूर करदे, तेरे सिवा कोई इसे दूर करने वाला नहीं।

शिबली ने रोते रोते पूछा कि हज़रत आप हाफ़िज़े कुरआन थे और सातों किराअत में माहिर थे, क्या अब भी आपको कुछ याद है?

शेख़ ने कहा कि ऐ अज़ीज़ों! मुझे पूरे कुरआन में सिर्फ़ यही दो आयतें याद हैं।

(जिसको अल्लाह ज़लील करे उसे कोई इज़्ज़त देने वाला नहीं, बेशक अल्लाह जो चाहता है करता है)

और दूसरी ये आयतः (जिसने ईमान के बदले कुफ़्र अख़्तियार किया बिलाशुब्हा वो सीधे रास्ते से गुमराह हो गया)

हज़रत शिबली ने अर्ज़ किया कि ऐ शेख तीस हज़ार हदीसें सनद के साथ आपके नोके ज़बान थीं, क्या इनमे से भी कुछ याद है?

शेख ने कहा कि सिर्फ़ एक हदीस याद हैः (जिसने अपना दीन बदल डाला उसे क़त्ल कर दो)

शिबली कहते हैं कि हमने अपने शेख को उनके हाल पर छोड़ दिया और बग़दाद के लिये वापिस चल दिये। अभी कुछ ही फ़ासला तय हुआ था कि हमने देखा कि सामने एक नहर है और हमारे शेख़ उस नहर से गुस्ल करके निकल रहे हैं और बुलन्द आवाज़ में कलिमा शहादत पड़ रहे हैं। ये देखकर हम बेपनाह ख़ुश हुए हमारी इस ख़ुशी का अन्दाज़ा तो बस वही कर सकता है जिसको इससे पहले की हमारी मुसीबत का अन्दाज़ा हो।

हमने शेख से अर्ज़ किया कि आपकी इस आज़माइश की क्या वहज थी?आख़िर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने आप ही को इससे क्यों दो चार किया?शेख ने फ़रमाया,

"हमारा काफ़िला जिस बस्ती में पहुंचा था, वहां के लोग शिर्क में पड़े थे, कोई बुतों को पूजता था, कोई सलीब को माबूद समझता था, जगह–जगह बुतख़ाने, आतिश क़दे और गिरिजाघर बने हुए थे। गांव वालों को शिर्क की ग़लाज़त में डूबा देखकर मेरे दिल में घमन्ड पैदा हुआ और इस बड़ाई का एहसास हुआ कि हम मोमिन हैं, एक ख़ुदा की बन्दगी करने वाले हैं और ये कम्बख़्त कितने बेवकूफ़ हैं बेहिस व बेजान चीज़ को इन्होंने अपना ख़ुदा बनाकर रखा है। बस उसी वक़्त मुझे एक ग़ैबी निदा सुनाई दी कि तुम्हारा ये ईमान और तौहीद तुम्हारा ज़ाति कमाल नहीं है ये सबकुछ हमारी तौफ़ीक़ से है, क्या तुम अपने ईमान को अपने अख़्तियार में समझते हो, बस उसी वक़्त मुझे ये एहसास हुआ कि जैसे कोई परिन्दा मेरे दिल से निकल कर उड़ गया जो कि मेरा ईमान था।"

बिलाशुब्हा घमन्ड एक ऐसा गुनाह है जिस पर अल्लाह तआला की सख़्त पकड़ से बड़े बड़े सूफ़ी और बुजुर्ग भी नहीं बच सकते तो ऐरौ–ग़ैरो का क्या शुमार। हमें ईमान की और नेक आमाल की जो दौलत मिली है वो केवल अल्लाह की तौफ़ीक़ है। अपने आमाल पुरजोश होने और इतराने के बजाए अल्लाह का शुक्र अदा करना चाहिये ताकि मरने के बाद वाली ज़िन्दगी में भी उसकी तौफ़ीक हमारे साथ रहे और हम उसकी रहमत के हक़दार बने।

आओ दीन सीखें

वुज़ू के अहकाम

वुज़ू करना कब ज़रूरी है: जिन कामों के लिये वुज़ू करना ज़रूरी है वे निम्नलिखित हैं:

नमाज के लिये, कुरआन मजीद छूने के लिये, सजदा तिलावत करने के लिये, नमाज़े जनाज़ा के लिये, काबा के तवाफ़ के लिये।

वुज़ू के फ़राएज़: नीचे दिये गये फ़र्ज़ों में से अगर कोई भी एक छूट जाए तो वुज़ू पूरा नहीं होगा—

१— पेशानी के बालों से लेकर ठोड़ी के नीचे तक और एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक पूरे चेहरे को मुकम्मल तौर पर धोना। २— दोनों हाथों को कोहनियों समेत धोना। ३— सर के चौथाई हिस्से का मसह करना। ४— दोनों पांव को टख्नों समेत धोना।

वुज़ू की सुन्नतें: वुज़ू की नियत करना। बिस्मिल्लाहिर्रहमानर्रहीम पढ़ कर वुज़ू करना या इस दुआ को पढ़ना (अल्लाह तआला के नाम से शुरू करता हूँ और अपने मुसलमान होने पर उसी का शुक्र है) पहले दोनों हाथों को कलाई तक धो लेना। मिस्वाक करना और अगर मिस्वाक मौजूद न हो तो उंगली से दांतों से मल लेना। कुल्ली करना। नाक में पानी चढ़ाना। अगर रोज़ा न हो तो नाक में पानी अच्छी तरह चढ़ाना और कुल्ली की जगह ग़रारा करना। वुज़ू के हर अंग को तीन—तीन बार धोना। पूरे सर का एक बार मसह करना। सिर्फ़ गर्दन का मसह करना। कान के ज़ाहिरी और अन्दरूनी हिस्से का मसह करना। दाढ़ी में ख़िलाल करना। उंगलियों में ख़िलाल करना। हर अंग को रगड़कर धोना। एक अंग सूखने से पहले दूसरे अंग का धो लेना। पहले दायें तरफ़ फिर बायें तरफ़ धोना। तरतीब का ख़्याल रखना। वुज़ू करते वक़्त दुआओं का पढ़ना।

वुज़ू के मुस्तहिब्बात: किसी ऊंची जगह बैठ कर वुज़ू करना। किब्ले की तरफ़ रुख़ करना। वुज़ू करने में बिलावजह किसी से मदद न लेना। वुज़ू के दौरान बातें न करना। हर अंग को धोते समय बिस्मिल्लाहिर्रहमानर्रहीम पढ़ना। कानों के मस हके वक़्त भीगी हुई छोटी उंगलियों को दोनों कानों के सूराख़ में उंगली डालना। अगर अंगूठी पानी के पहुंचने में रूकावट हो तो हरकत देना। अगर तंग है तो उसका हिलाना ज़रूरी है। मुंह और नाक में पानी डालने के लिये दायें हाथ का इस्तेमाल करना। नाक की सफ़ाई के लिये बायें हाथ का इस्तेमाल करना। दिल और ज़बान की नियत को एक साथ जमा करना। वुज़ू में दुआओं का एहतिमाम करना। नमाज़ के वक़्त से पहले वुज़ू करन लेना। जब वुज़ू से फ़ारिग़ हो तो कलिमा शहादत पढ़ना।

वुज़ू को तोड़ने वाली चीज़ें:

- पेशाब या पाख़ाना करना या इन दोनों के रास्ते से किसी चीज़ का निकलना।
- बदन के किसी हिस्से से ख़ून या पीप का निकल कर बह जाना।
- मुंह भर कर क़ै करना।
- बीमारी या किसी दूसरी वजह से बेहोश हो जाना।
- नशे में हो जाना
- पागल हो जाना
- लेट कर या किसी चीज़ का सहारा लेकर सो जाना।
- रूकुअ व सजदे वाली नमाज़ में क़हक़हा लगाना।

मुहम्मद नजमुद्दीन नदवी

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Postal Reg. No.
RBL/NP - 10

ISSUE: 01 JANUARY 2015 VOLUME: 07

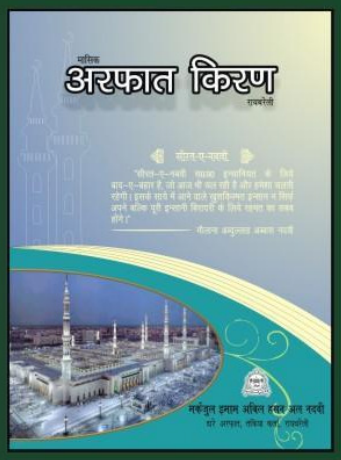

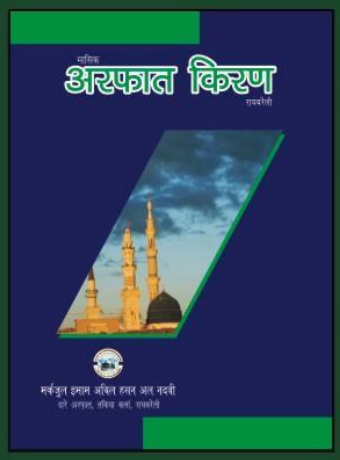

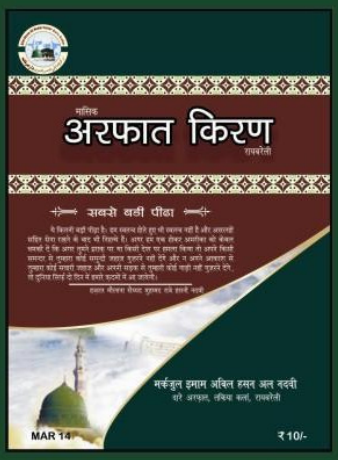

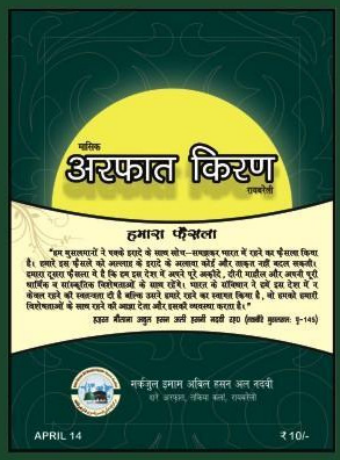

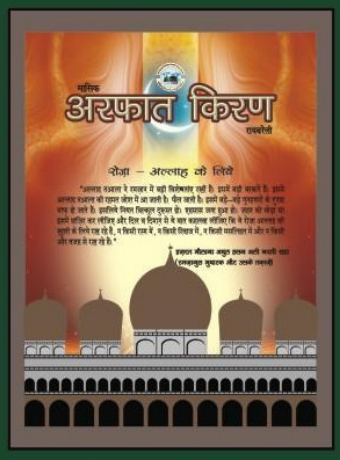

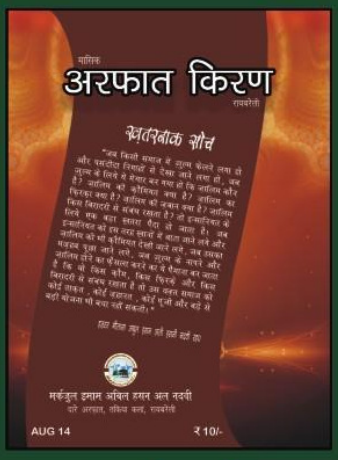

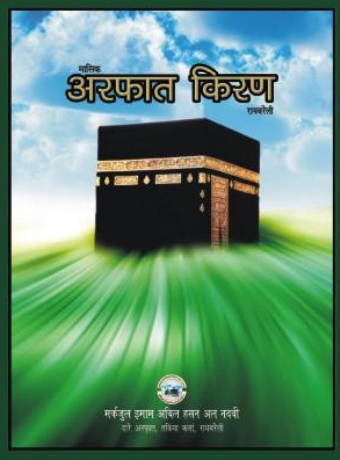

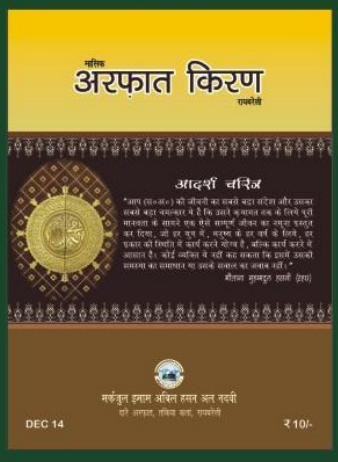

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9792646858
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.